केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 282 सोमवार 6 मई 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

यूपी के 10 सीटों पर प्रचार थमा, मतदान 7 को

लखनऊ (आभा)। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में उत्तर प्रदेश की 10 सीटों पर रविवार पांच मई की शाम को चुनाव प्रचार थम गया। इन सीटों पर मंगलवार को मतदान होगा। यह सीटें हैं–सम्भल, हाथरस सु., फतेहपुर सीकरी, फिरोजाबाद, मैनपुरी, एटा, बदायूं, आंवला और बरेली। इन 10 सीटों में से दो सीटों पर प्रदेश सरकार के दो मंत्रियों, चार सीटों पर भाजपा के मौजूदा सांसदों और तीन सीटों पर सपा मुखिया के परिवार के तीन सदस्यों की अग्निपरीक्षा होगी। इन 10 सीटों पर शुक्रवार 12 अप्रैल से नामांकन की प्रक्रिया शुरु हुई थी। 22 अप्रैल को नाम वापसी की आखिरी तारीख बीतने के बाद इन 10 सीटों पर प्रचार शुरु हुआ था। इन 10 सीटों पर इस बार चुनाव लड़ने वाले प्रमुख प्रत्याशियों में प्रदेश सरकार के दो मंत्री और सपा प्रमुख अखिलेश यादव की पत्नी डिम्पल यादव भी हैं।

ट्रेन से कटकर तीन लोगों की मौत

संवाददाता–बस्ती। बस्ती–गोंडा रेलखंड पर टिनिच व बभनान के बीच ट्रेन से कटकर बिहार के मजदूर समेत दो युवकों की मौत हो गई। बभनान स्टेशन से एक किमी पहले हुई घटना में 44 वर्षीय युवक रविवार को दोपहर डाउन ट्रैक पार करते समय ट्रेन की चपेट में आ गया। उसके शरीर के दो टुकड़े हो गए। कपड़ों की तलाशी में उसके पास आधार कार्ड मिला। इससे उसकी शिनाख्त परशुरामपुर थाना क्षेत्र के निपानिया गांव निवासी रामकुमार के रूप में की गई। दूसरी घटना टिनिच स्टेशन से 500 मीटर पश्चिम हुई। लुधियाना से बिहार जा रहे युवक का शव डाउन ट्रैक पर पाया गया। बभनान स्टेशन से एक किमी पूरब फाटक संख्या 221 व 220 के बीच डाउन ट्रैक के किनारे रविवार को पुलिस ने 44 वर्षीय युवक का क्षत विक्षत शव बरामद किया। स्टेशन अधीक्षक के मेमो पर बभनान चौकी की पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांचबीन शुरू की। पता चला कि दोपहर में एक युवक डाउन ट्रैक पार कर रहा था। इसी बीच ट्रेन आ जाने से वह चपेट में आ गया। चौकी प्रभारी बभनान धर्मेंद्र कुमार तिवारी ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

गौर थाना क्षेत्र के टिनिच पुलिस चौकी अंतर्गत एफसीआई गोदाम के पास रेलवे ट्रैक पर ट्रेन से गिरकर एक युवक की मौत हो गई। चौकी प्रभारी सचिन्द्र ने बताया की ग्राम प्रधान ने फोन कर सूचित किया। युवक की जेब से लुधियाना से मधुपुरा बिहार जाने का जनरल टिकट व मोबाइल फोन मिला। फोन के जरिए उसकी पहचान बिहार के मधुपुरा जनपद के थाना उदादीपगंज निवासी पप्पू पुत्र शिवकुमार मंडल के रूप में हुई।

हज यात्रा के लिये हुआ टीकाकरण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। हज यात्रा पर जाने वाले जिले के हज यात्रियों के टीकाकरण के लिए शहर के दो जगहों पर शिविर आयोजित की गई। शहर के जामा मस्जिद दरियाखां और मदरसा जामिया हनफिया रहमतगंज गांधीनगर में शिविर आयोजित हुई, जहां संजीकृत 82 हज यात्रियों का वैक्सीनेशन हुआ। सीएमओ डॉ. आरएस दुबे ने बताया कि यात्रियों को मैनिंगोकोकल मेनिनजाइटिस का टीका लगाया गया।

ओरल पोलियो ड्राप भी पिलाई गई। शिविर में सीएचसी मुंडेरवा के डॉ. फारूक अहमद, सीएचसी मरवटिया के डॉ. नदीम अहमद, डॉ. एके कुशवाहा, डीएचईआईओ राजेश चौधरी ने सहयोग किया। एएनएम अनुराधा सिंह, शशि मिश्रा, रोजी, प्रतिमा सिंह, संयोगिता पांडेय, पुष्पा यादव ने टीकाकरण किया। दोनों स्थानों पर 82 हज यात्रियों का वैक्सीनेशन किया गया।

प्राण प्रतिष्ठा के बाद चुनाव प्रचार के दौरान अयोध्या पहुंचे पीएम मोदी

संवाददाता– अयोध्या। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में रविवार की शाम राम लला के दर्शन के बाद रोड शो किया। करीब दो किलोमीटर लंबा ये रोडशो सुग्रीव किला से लता चौक तक निकाला गया। रोड शो के लिए पीएम मोदी अयोध्या पहुंचे । यहां से पीएम मोदी सीधे राम मंदिर पहुंचे हैं। पीएम मोदी ने राम मंदिर पहुंच रामलला के दर्शन किया इसके बाद पीएम मोदी रोड शो के विशेष रथ में सवार हुये। पीएम मोदी के रोड शो को लेकर प्रशासन ने पुख्ता तैयारी की थी। रोड शो को देखने के लिए अयोध्या समेत आसपास जिलों से भी लोग पहुंचे । पीएम मोदी को देखने के लिए सड़क किनारे भारी जनसैलाब उमड़ा । हालांकि पीएम मोदी से पहले सीएम योगी रोड शो की तैयारियों को देखने के लिए अयोध्या पहुंच गए थे और उन्होंने राम मंदिर में रामलला के दर्शन किए ।

इसके पूर्व यूपी के धौरहरा में पीएम नरेंद्र मोदी ने जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा, श्भैरा अपना तो कोई परिवार है नहीं, मेरे परिवार भी आप हैं, मेरे वारिस भी आप हैं। मेरा भारत, मेरा

परिवार! जैसे परिवार का मुखिया अपने वारिस के लिए दिन–रात काम करता है, वैसे ही आपके परिवार के सेवक के रूप में मैं भी आपको कुछ देकर जाना चाहता हूं। मुझे आपके क्षेत्र का विकास करना है, आपका विकास करना है, देश का विकास करना है, देश को विकसित बनाना है।'

पीएम मोदी ने आगे कहा, 'मोदी आप सभी किसानों के लिए कैसे काम कर रहा है, उसका उदाहरण है इथेनॉल। आज कल आप सुनते होंगे कि मोदी इथेनॉल का उत्पादन बढ़ाने में जुटा है। मोदी सिर्फ इथेनॉल का उत्पादन ही नहीं, बल्कि आपकी आय भी बढ़ा रहा है। 10 वर्षों में करीब 80 हजार करोड़ रुपये इथेनॉल खरीद में किसान को मिले हैं। मोदी, देश के विकास के साथ ही स्थानीय स्तर पर होने वाले विकास कार्यों को भी उतनी ही प्राथमिकता देता है।'

पीएम मोदी ने कहा, '2014 के पहले, 10 साल आपने कांग्रेस और इंडी गठबंधन का काम देखा है। याद कीजिए, उन्होंने देश और प्रदेश का क्या हाल कर रखा था। ये इंडी गठबंधन वाले सुरक्षा एजेंसियों के हाथ–पांव बांध कर रखते थे। देश की पुलिस, देश की एजेंसियों को आतंक के खिलाफ कार्रवाई नहीं करने दी जाती थी। यहां यूपी में भी यही हाल था।

भाजपा का निष्ठावान कार्यकर्ता बनकर पार्टी की सेवा करूंगा सेवा -राजकिशोर सिंह

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भाजपा में शामिल हुए पूर्व कैबिनेट मंत्री राजकिशोर सिंह रविवार को गृह जनपद बस्ती पहुंचे, जहां पर उनके समर्थकों एवं भाजपा कार्यकर्ताओं ने जगह–जगह उनका स्वागत किया। इस मौके पर राजकिशोर सिंह ने कहा कि भाजपा का ईमानदार कार्यकर्ता बनकर पार्टी का सेवा करूंगा और प्रधानमंत्री मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी के हाथों को मजबूत करूंगा।

उल्लेखनीय है कि 02 मई को गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात के बाद भारतीय जनता पार्टी के लखनऊ स्थित प्रदेश मुख्यालय में प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी एवं प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के समक्ष बीजेपी में शामिल हुए

श्री सिंह भाजपा की सदस्यता लेने के बाद रविवार को बस्ती के निकले, वह अयोध्या की सीमा पर पहुंचे तो उनके समर्थकों ने उनका भव्य स्वागत किया। उनके स्वागत के दौरान सांसद एवं बस्ती से प्रत्याशी हरीश द्विवेदी एवं उनके समर्थक भी उपस्थित रहे।

कांग्रेस नेता बसन्त चौधरी ने गठबंधन प्रत्याशी के लिये झोंकी ताकत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

भानपुर (बस्ती) भानपुर तहसील क्षेत्र के सल्टौआ विकासखंड के अंतर्गत एक निजी हाल में कांग्रेस नेता एवं पूर्व लोकसभा प्रत्याशी बसंत चौधरी ने पत्रकारों से वार्ता कर बताया कि सोमवार को सुबह 11 बजे अमित मैरिज हाल सल्टौआ में कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया है। बसंत चौधरी ने बताया कि इंडिया गठबंधन से समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार राम प्रसाद चौधरी के समर्थन में जनसंपर्क किया जाएगा एवं कांग्रेस के घोषणा पत्र को जन जन तक पहुंचाया जाएगा।

कांग्रेस पार्टी के पूर्व लोकसभा प्रत्याशी बसंत चौधरी ने भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि वर्तमान की सरकार युवाओं को रोजगार न देकर बेरोजगारी बढ़ाने का कार्य कर रही है। वर्तमान की सरकार पूर्व की सरकार में बनाए गए सभी सरकारी संस्थाओं को पूजीपतियों के हाथ में बेचने का काम कर रही है। कांग्रेस पार्टी द्वारा जारी मेनिफेस्टो में 30 लाख लोगों को रोजगार, जरूरतमंदों को 25 लाख रुपए तक का निशुल्क इलाज, महिलाओं को लगभग एक लाख रुपए की वार्षिक मदद सहित अन्य कई योजनाओं को देने का वादा किया है। उन्होंने कहा कि देश में कांग्रेस की सरकार बनते ही पहली कैबिनेट बैठक में 30 लाख सरकारी नौकरी दिए जाने की अधिसूचना जारी की जारी की जाएगी एवं कांग्रेस व इंडिया गठबंधन द्वारा जारी मेनिफेस्टो के अनुसार लोगों को सुविधाएं मुहैया कराई जाएगी। उन्होंने मीडिया से बात करते हुए सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में लोगों से पहुंचने की अपील किया ।

रेडक्रास द्वारा फल वितरण, रक्तदान शिविर 8 को

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रेड क्रॉस के जनक जीन हेनरी डयूनॉट के जन्मदिन पर 8 मई को जिलाधिकारी अन्दा वासी द्वारा रेड क्रॉस सोसायटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सुबह 10 बजे वृद्धाश्रम बनकटा में फल वितरण किया जायेगा। दिन में 12 बजे रक्तदान शिविर का आयोजन बादशाह मल्टीप्लेक्स पर होगा।

यह जानकारी देते हुये रेड क्रॉस सोसायटी के सचिव सरदार कुलवेन्द्र सिंह ने बताया कि वृद्धाश्रम में लगभग 70 पुरुष व महिलाएं रह रही है उनके खाने पीने व आवश्यक वस्तुएं दी जायेगी। उन्होने फल वितरण और रक्तदान शिविर में योगदान का आग्रह किया है।

क्षेत्रीय प्रबंधक ने किया बस्ती रोडवेज का निरीक्षण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। परिवहन निगम गोरखपुर के क्षेत्रीय प्रबंधक लव कुमार सिंह और सेवा प्रबंधक मुकेश कुमार ने बस्ती रोडवेज डिपो का निरीक्षण किया। यहां उन्होंने बसों के रख–रखाव से लेकर आय और डीजल औसत आदि की समीक्षा की। चुनाव में भेजी गई बसों को बारे में जानकारी ली। आरएम ने कहा कि मार्ग और चुनाव में जो भी बसें भेजी जाएं वह पूरी तरह से दुरुस्त हों, ढिलाई कतई न हो।

उन्होंने कार्यालय में आय–व्यय, बसों के डीजल औसत, आपूर्ति, बसों से प्राप्त हो रही आय की समीक्षा की। बसें कम होने के कारण आय कम है। इसके बाद उन्होंने स्टेशन पर यात्री सुविधाएं देखी। पेयजल व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था में सुधार के निर्देश दिए। कार्यशाला में रख–रखाव और मरम्मत के लिए खड़ी बसों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि जो भी बसें मरम्मत के लिए यहां आती हैं, उसको प्राथमिकता पर दुरुस्त कराते हुए मार्ग पर समय से संचालन कराएं।

कार्यों की गुणवत्ता सही होना चाहिए, ताकि बसें ब्रेकडाउन न हों। डीजल पंप को भी देखा। एआरएम को निर्देश दिए कि यात्री सुविधाओं में कमी न हो। नियमित निरीक्षण करते रहें। गर्मी में पेयजल की व्यवस्था ठीक रखें। यात्रियों के साथ चालक–परिचालक मृदुल भाषा का ही प्रयोग करें। शिकायत पर गंभीरता से जांच कराएं। दो घंटे निरीक्षण करने के बाद आरएम गोरखपुर वापस गए। इस दौरान एसएसआई सूबेदार सिंह, फोरमैन ऋषिकेश चौरसिया, राम बरीका, अभिनव श्रीवास्तव, संजय तिवारी, कन्हैया सिंह, इंद्रजीत तिवारी, मनीष श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

आतंकी हमले में वायु सेना का एक जवान शहीद, 5 घायल

श्रीनगर (आभा)। जम्मू– कश्मीर के पुंछ में आतंकवादी हमले में भारतीय वायु सेना के जवान कॉर्पोरल विक्की पहाड़े शहीद हो गए। वह अपने बेटे का जन्मदिन मनाने के लिए तीन दिनों बाद ही अपने घर जाने वाले थे। शहीद पहाड़े मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के रहने वाले थे। उन्होंने मंगलवार को अपने गांव नोनिया–करबल लौटने का प्लान बनाया था। रिपोर्ट के मुताबिक, विक्की पहाड़े पिछले महीने अपनी बहन की शादी में शामिल होने के लिए घर गए थे। इसके बाद 18 अप्रैल को वह यूनिट में वापस लौट गए। वह 33 साल के थे। साल 2011 में पहाड़े भारतीय वायु सेना में भर्ती हुए थे। उनके परिवार में उनकी पत्नी, 5 साल का बेटा, मां और तीन बहनें हैं।

पुंछ जिले के मेंढर–सूरनकोट इलाके में आतंकवादियों ने शनिवार शाम वायु सेना के काफिले पर हमला कर दिया था। इसमें 5 जवान घायल हुए जिनमें से पहाड़े ने दम तोड़ दिया। 4 अन्य का कमांड अस्पताल उधमपुर में इलाज चल रहा है। वायुसेना ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट में कहा, 'आतंकवादियों के साथ भीषण गोलीबारी में वायु योद्धाओं ने जवाबी गोलीबारी करके मुकाबला किया। इस कार्रवाई में पांच आईएएफ कर्मियों को गोली लग गई और उन्हें तत्काल चिकित्सा के लिए निकटतम सैन्य अस्पताल ले जाया गया। एक वायु योद्धा ने बाद में चोटों के कारण दम तोड़ दिया। स्थानीय सुरक्षा बलों की ओर से आगे की कार्रवाई जारी है।'

पिछले साल सेना पर सिलसिलेवार आतंकी हमलों का गवाह रहे इस क्षेत्र में इस साल सशस्त्र बलों पर यह पहला बड़ा हमला है। हमले की जगह के दृश्यों में आग की चपेट में आए वाहन की विंडस्क्रीन पर दर्जन भर गोलियों के छेद दिखाई दे रहे हैं। हालांकि, आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि आतंकवादियों की आवाजाही की रिपोर्ट के बाद पिछले कुछ दिनों से इलाके में तलाशी अभियान चल रहा था। इस दौरान आतंकवादियों ने वायु सेना कर्मियों को ले जा रहे वाहन पर गोलीबारी की, जिसका प्रभावी ढंग से जवाब दिया गया और इस गोलीबारी में पांच कर्मी घायल हो गए। पिछले 12 दिनों में राजौरी–पुंछ क्षेत्र में यह दूसरा आतंकवादी हमला है। 22 अप्रैल को थानामंडी के शाहदरा शरीफ इलाके के पास अज्ञात आतंकवादियों की गोलीबारी में 40 वर्षीय सरकारी कर्मचारी की मौत हो गई थी।

बिहार के 5 सीटों पर प्रचार थमा

पटना (आभा)। बिहार में तीसरे चरण के लोकसभा चुनाव को लेकर पांच संसदीय क्षेत्रों में चुनाव प्रचार का शोर रविवार को समाप्त हो गया। इस चरण के पांच लोकसभा क्षेत्रों झंझारपुर, सुपौल, अररिया, मधेपुरा व खगड़िया में मतदान 7 मई को होगा। चुनाव प्रचार समाप्त होने के बाद इस चरण के उम्मीदवार जनसंपर्क अभियान में जुट गए और लोगों को अपने पक्ष में गोलबंद करने लगे। इस चरण के चुनाव क्षेत्रों में कुल 54 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला होगा। इनमें 51 पुरुष एवं 3 महिला उम्मीदवार शामिल हैं। इस चरण में एनडीए की ओर से जदयू के 3 और भाजपा एवं लोजपा–आर के 1–1 प्रत्याशी मैदान में हैं जबकि इंडिया गठबंधन की ओर से राजद के 3 और माकपा व वीआईपी के 1–1 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। इनके अतिरिक्त बसपा के 5 उम्मीदवार भी चुनाव मैदान में हैं। इनमें सुपौल, मधेपुरा में राजद व जदयू की सीधी टक्कर है ।

प्रमोद ओझा, कुसुम चौधरी रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर के वोकेशनल पुरस्कार से सम्मानित

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर के अधिकारिक दौरे पर आए रोटरी मण्डलाध्यक्ष रोटेरियन सुनील बंसल ने कार्यक्रम के दौरान सामाजिक कार्यकर्ता हाइवे दूत के नाम से प्रसिद्ध प्रमोद ओझा, सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती कुसुम चौधरी को वोकेशनल पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर क्लब के पूर्व अध्यक्ष डा. वी के वर्मा ने रोटरी मण्डलाध्यक्ष को स्वरचित पुस्तक कोविड–19 भेंट किया।

रोटरी मण्डलाध्यक्ष सुनील बंसल ने वोकेशनल पुरस्कार देते हुये कहा कि रोटरी विभिन्न क्षेत्रों में सेवा से जुड़े लोगों को प्रोत्साहित कर उनका उत्साहवर्धन करती है। क्लब के पूर्व अध्यक्ष डा. वी के वर्मा ने बताया कि हाइवे दूत के नाम से प्रसिद्ध

प्रमोद ओझा दुर्घटना के समय घायलों को अस्पताल पहुंचाकर जहां लोगों की जान बचाने में योगदान कर रहे हैं वहीं कुसुम चौधरी जन कल्याणकारी योजनाओं से पात्रों को लाभान्वित करने में अपनी भूमिका निभाती है। क्लब अध्यक्ष प्रतिभा गोयल, सचिव किशन गोयल ने क्लब के गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर मुख्य रूप से रोटेरियन अशोक कुमार शुक्ल, राम दयाल चौधरी, श्याम नरायण, डा. आलोक रंजन, राजेश्वरी देवी, कमला देवी, इन्टरैक्ट क्लब बस्ती ग्रेटर के अध्यक्ष , सुमिर गोयल, सचिन आहूजा, युवराज, हर्षित श्रीवास्तव, शौर्य गोयल आदि उपस्थित रहे।

डिम्पल यादव के रोड शो में महाराणा प्रताप की प्रतिमा खण्डित किये जाने के विरोध में विश्व हिन्दू महासंघ ने सौंपा ज्ञापन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रविवार को विश्व हिन्दू महासंघ जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह के नेतृत्व में महासंघ पदाधिकारियों ने राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन उनके प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा। मांग किया कि लोकसभा क्षेत्र मैनपुरी में समाजवादी पार्टी के रोड शो के दौरान महापुरुष महाराणा प्रताप जी की प्रतिमा का अनादर व तोड़–फोड़ करने के मामले में दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाय।

ज्ञापन देने के बाद विश्व हिन्दू महासंघ जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह ने कहा कि मैनपुरी लोकसभा में सपा प्रत्याशी श्रीमती डिम्पल यादव के रोड शो में भारत की अस्मिता व मान–सम्मान की रक्षा के लिए मुगलों से बड़ी लड़ाई लड़ने वाले महाराणा प्रताप जी जिन्होंने भारत के सम्मान की रक्षा के लिए घास की रोटी खाना स्वीकार किया, किसी भी दशा में मुगलों के आगे नहीं झुके, ऐसे में भारत माता के वीर सपूत महाराणा प्रताप जी की प्रतिमा को सपा के कार्यकर्ताओं द्वारा अपमानित करते हुए तोड़ दिया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। महाराणा प्रताप जी के प्रतिमा का अपमान किया जाना एवं उनकी प्रतिमा का तोड़–फोड़ करना, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति अमर्यादित शब्दों

का इस्तेमाल करने के साथ ही उनकी दिवंगत माता के प्रति अमर्यादित शब्दों का प्रयोग किया जाना एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रति भी अमर्यादित शब्दों का प्रयोग किया जाना राष्ट्रहित व लोकतंत्र के लिए बेहद दुखद है। कहा कि दुःखद तो ये कि तोड़फोड़ के समय सपा प्रमुख अखिलेश सिंह यादव अपनी धर्मपत्नी श्रीमती डिंपल यादव के साथ–साथ मौजूद रहे।

विश्व हिन्दू महासंघ द्वारा राष्ट्रपति को भेजे ज्ञापन में मांग किया गया है कि इस कृत्य के लिए सपा प्रमुख अखिलेश सिंह यादव एवं मैनपुरी की लोकसभा प्रत्याशी श्रीमती डिम्पल यादव के खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही किया जाय और वे इस कृत्य के लिये देश से क्षमा मांगे।

ज्ञापन सौंपने वालों में मुख्य रूप से बिपिन सिंह राजकुमार उर्फ मंटू, चौधरी, महेश हिंदुस्तानी, बिंदगोपाल त्रिपाठी, सौरभ तिवारी, मुन्ना सिंह चंद्रेश पाठक, विजय शंकर शुक्ला, भानु गुप्त, कुलदीप मिश्रा पल्टूराम चौहान, बाबा जयप्रकाशदास , अजय मिश्रा, अमरजीत यादव, डब्लू सिंह, अमरजीत सिंह, अरविंद सिंह, बिक्कू सिंह, परमानंद गुप्ता, संदीप वरुण त्रिपाठी प्रमोद सिंह, सतीश पाण्डेय, चंद्रकांत पाण्डेय, शैलेंद्र प्रताप सिंह, राजेश उर्फ विधायक, सुशील कुमार, परशुराम सहनी, श्रीमती प्रिया गुप्ता के साथ ही विश्व हिन्दू महासंघ के अनेक पदाधिकारी, सदस्य उपस्थित रहे।

अखिलेश यादव ने भाजपा से पूछे 100 से अधिक सवाल

लखनऊ (आभा)। लोकसभा चुनाव के दो चरण की वोटिंग हो चुकी है। तीसरे चरण के लिए 7 मई को वोटिंग होगी। हालांकि इससे पहले हर राजनीतिक पार्टियां एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप लगा रही हैं। सभी एक दूसरे के कामों का ब्योरा मांग रहे हैं। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव रविवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक ट्वीट पोस्ट करते हुए भाजपा से 100 से अधिक सवाल पूछे हैं।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए बीजेपी पर हमला बोला है। उन्होंने भाजपा को निशाने पर लेते हुए लिखा,'जनता के ये सच्चे सवाल ही भाजपा की झूठी सरकार को उखाड़ फेंकेंगे।' सपा नेता ने वैक्सीन को

लेकर लिखा कि भाजपा ने बिना जांच पड़ताल के कोरोना का जानलेवा टीका जनता को क्यों लगवाया? कोरोना की वैक्सीन बनाने वाली कंपनी से करोड़ों रुपये खाकर जनता के जीवन को जोखिम में क्यों डाला? भाजपा ने मानकों पर खरा उतरे बिना अपने समर्थकों की दवाई व अन्य उत्पादों को बिकने क्यों दिया?

सपा नेता के 100 से अधिक सवालों में युवाओं के रोजगार से संबंधित सवाल भी शामिल हैं। पोस्ट में डबल इंजन की सरकार पर निशाना साधते हुए पोस्ट में है, श्भाजपा ने संविधान द्वारा दिए गए आरक्षण को खत्म करने की बात क्यों उठायी? भाजपा ने सरकारी नौकरी न निकालकर आरक्षण से मिलनेवाली नौकरियों को मिलने से रोक क्यों दिया? भाजपा ने पेपर लीक करवाकर किसी भी भर्ती को पूरा होने क्यों नहीं दिया? भाजपा ने सेना की पक्की नौकरी को 4 साल की कच्ची नौकरी में बदलने क्यों दिया? भाजपा ने अग्निवीर जैसी अल्पकालीन सेना भर्ती में पेंशन और शहीद का दर्जा क्यों नहीं दिया?

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 6 मई 2024 सोमवार

सम्पादकीय

छोटे दलों की बड़ी भूमिका

अब लोकसभा के चुनाव में क्षेत्रीय दलों की भूमिका निर्णायक होती जा रही है। बड़े दल कई राज्यों में इनके आगे नत मस्तक भूमिका में है। छोटे राजनीतिक दल स्थानीय मुद्दों को उठाकर सच्ची और सामाजिक सरोकार की राजनीति कर सकते हैं। ऐसे राजनीतिक दल जनता से जुड़ाव और स्थानीय मुद्दों को केन्द्र में रखकर सामाजिक परिवर्तन में एक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि इस तरह के दल बड़े राजनीतिक दलों के चक्रव्यूह में फंसते नजर आ रहे हैं। लगभग 8–10 जिलों तक सिमटे रहने वाले छोटे राजनीतिक दलों का व्यवहार लगातार बदलता रहता है। वे किसी एक विचारधारा पर कायम नहीं रह पाते हैं। जब छोटे दल किसी भी हाल में सत्ता के साथ गठजोड़ कर लेते हैं तो यह सवाल खड़ा होता है कि बड़ी–बड़ी बातें करने वाले छोटे राजनीतिक दलों का उद्देश्य आखिर क्या होता है? अक्सर बहुत छोटी राजनीतिक पाघ्टयां समय आने पर स्वयं राजनीतिक सौदेबाजी करने लगती हैं या फिर राजनीतिक सौदेबाजी का शिकार हो जाती हैं।

इस तरह ऐसी पार्टियां संघर्ष का रास्ता छोड़कर अपने लिए मलाई चाटने वाला रास्ता पकड़ लेती हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या बहुत छोटे राजनीतिक दल किसी बड़े सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्य को लेकर पैदा होते हैं या फिर उनका उद्देश्य केवल अपना व्यक्तिगत स्वार्थ साधना होता है? छोटे राजनीतिक दलों का दायरा छोटा होने के कारण वे जनता से बेहतर तरीके से संवाद कर सकते हैं और उनके दुख–दर्द में शामिल हो सकते हैं। जनता से व्यक्तिगत रूप से जुडने का फायदा भी उन्हें हो सकता है। बड़े राजनीतिक दल अक्सर जनता के बहुत छोटे मुद्दों पर मौन रहते हैं। ऐसे माहौल में छोटे दलों के पास यह अवसर होता है कि वे बड़े दलों की इस कमजोरी का फायदा उठाकर सामाजिक परिवर्तन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करें और सामाजिक सरोकार की राजनीति को आगे बढ़ाएं। विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या वास्तव में ऐसा हो पाता है? क्या सच्चे अर्थों में छोटे दल किसी बड़ी क्रान्ति का स्वप्न देखते हैं या फिर किसी भी तरह सत्ता का हिस्सा बनना ही उनका स्वप्न होता है?

अक्सर कुछ अपवादों को छोड़कर छोटे राजनीतिक दल कोई बड़ा संघर्ष करते नजर नहीं आते। ऐसे दल सत्ता के खिलाफ संघर्ष करने और सामाजिक परिवर्तन की बात करते जरूर हैं लेकिन जब सामाजिक परिवर्तन के लिए लडने की बारी आती है तो लडने का रास्ता छोड़ देते हैं। उनके लिए सामाजिक परिवर्तन से ज्यादा जरूरी अपना परिवर्तन हो जाता है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि जनता छोटे राजनीतिक दलों पर क्यों विश्वास करे? छोटे राजनीतिक दलों पर विश्वास कर उन्हें क्या हासिल होगा? छोटे दलों के इस व्यवहार से जनता को कुछ हासिल हो या न हो लेकिन राजनीतिक दलों के आकाओं को बहुत कुछ हासिल हो जाता है। जातिवादी राजनीति के चलते ऐसी राजनीतिक पाघ्टयां 8–10 जिलों में अपना अस्तित्व बनाए रखती हैं और लगातार राजनीतिक सौदेबाजी के माध्यम से मलाई चाटती रहती हैं। इसी जातिवादी राजनीति के चलते छोटे दलों के अध्यक्ष छाती ठोककर लगातार पाला बदलते रहते हैं और अपने स्तरहीन बयानों के माध्यम से चर्चा में बने रहते हैं।

इस पूरे माहौल में सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या भविष्य में छोटे राजनीतिक दलों से कोई उम्मीद ही न की जाए ? उम्मीद पर तो यह दुनिया ही टिकी है लेकिन इस दौर में जिस तरह से विचारधारा की राजनीति खत्म हो रही है, उससे वास्तविक रूप से सामाजिक सरोकार रखने वाले संवेदनशील इंसान के मन में एक निराशा का भाव जरूर पैदा होता है। तो क्या भविष्य में छोटे राजनीतिक दल अपनी तुच्छ राजनीतिक इच्छाओं के स्वार्थ में बड़े राजनीतिक दलों का मोहरा बनते रहेंगे? क्या संघर्ष का रास्ता छोड़कर वे उन मतदाताओं का स्वप्न पूरा कर पाएंगे, जिनका नाम लेकर वे राजनीति करते हैं? लेकिन जब जनता ने ही सवाल उठाना बंद कर दिया हो तो छोटे राजनीतिक दलों से क्या उम्मीद की जा सकती है।

आक्रामक चुनाव और कांग्रेस की रक्षात्मक रणनीति!

—राज कुमार सिंह—

गांधी —नेहरू परिवार की पारंपरिक लोकसभा सीटों अमेठी और रायबरेली को लेकर जारी सस्पेंस के अंतिम क्षणों में पटाक्षेप से जवाब कम मिले, सवाल ज्यादा उठते हैं। इन सीटों पर नामांकन की अंतिम तिथि वाले दिन ही उम्मीदवारों के ऐलान से कांग्रेस की किसी सुनियोजित रणनीति के बजाय कन्फ्यूजन का संदेश ज्यादा गया। केरल में वायनाड से लगातार दूसरी बार चुनाव लड़ रहे पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी अब रायबरेली से भी लड़ेंगे। 2004 से 2019 तक रायबरेली से लगातार 5 बार जीतीं सोनिया गांधी ने बढ़ती उम्र और स्वास्थ्य कारणों से इस बार राजस्थान से राज्यसभा में चुने जाने का विकल्प चुना।

पिछली बार 2 सीटों से चुनाव लड़े राहुल वायनाड से तो जीत गए, लेकिन अपनी परम्परागत सीट अमेठी से, लगातार 3 बार जीतने के बाद, स्मृति ईरानी से लगभग 55 हजार वोटों से हार गए। इसीलिए लंबे अर्से से गांधी–नेहरू परिवार की पारंपरिक सीटें रहीं अमेठी और रायबरेली को लेकर राजनीतिक गलियारों से लेकर मीडिया तक में अटकलों का बाजार गर्म था। चर्चाएं रहीं कि वायनाड में मतदान हो जाने के बाद राहुल अमेठी से ताल ठोकेंगे, जबकि प्रियंका गांधी अपनी चुनावी राजनीति की शुरुआत रायबरेली से कर सकती हैं।

पिछले दिनों कांग्रेस सूत्रों के हवाले से यह खबर भी आई कि

राहुल–प्रियंका के असमंजस के बीच खुद सोनिया गांधी ने दोनों से फोन पर बात की है। यह भी बताया गया कि सोनिया ने यहां तक कहा है कि उन दोनों के चुनाव न लडने का अर्थ दोनों सीटें भाजपा को थाली में रख कर दे देने जैसा होगा। पर 3 मई को नामांकन के अंतिम दिन कांग्रेस ने ऐलान किया कि राहुल, रायबरेली से लडेंगे, जबकि अमेठी से गांधी–नेहरू परिवार के निष्ठावान रहे किशोरी लाल शर्मा चुनाव लड़ेंगे।

मूलतः पंजाब से आने वाले किशोरी लाल शर्मा दशकों से अमेठी और रायबरेली लोकसभा क्षेत्रों में, वहां से गांधी–नेहरू परिवार के निर्वाचित सांसदों के प्रतिनिधि के रूप में राजनीतिक कामकाज देखते रहे हैं। कोई राजनीतिक दल अपने निष्ठावान को पुरस्कृत करे, यह अच्छी बात है, पर क्या शर्मा के लिए रायबरेली ज्यादा आसान सीट नहीं होती? वहां से भाजपा उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे दिनेश प्रताप सिंह पुराने कांग्रेसी हैं, और पिछले लोकसभा चुनाव में सोनिया गांधी के विरुद्ध हार चुके हैं। ऐसे में राहुल के खुद रायबरेली से लडने और किशोरी लाल शर्मा को अमेठी में स्मृति ईरानी के विरुद्ध लड़वाने से बहुत सकारात्मक राजनीतिक संदेश नहीं गया है। राहुल को हरा चुकी स्मृति को शर्मा कड़ी टक्कर दे पाएंगे– ऐसा मानने का फिलहाल तो कोई आधार नहीं दिखता।

बेशक राहुल के पास वायनाड के मतदाताओं के प्रति प्रतिबद्धता के आधार पर किसी भी दूसरी सीट से चुनाव न लडने का बेहतर नैतिक आधार हो सकता था, लेकिन रायबरेली से लड़ कर उन्होंने उसे भी गंवा दिया। अगर 2 सीटों से ही चुनाव लड़ रहे हैं, तब अपनी परंपरागत सीट छोड़ कर रायबरेली जाने से भाजपा को यह प्रचार करने का मौका उन्होंने खुद उपलब्ध कराया है कि वह डर गए। माना कि अमेठी से राहुल की जीत तय नहीं थी, पर हार तय मान लेने का क्या कारण रहा? अब भाजपा के इस प्रचार की राहुल और कांग्रेस कैसे काट करेंगे?

सवाल यह भी है कि 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में 'लड़की हूं, लड़ सकती हूं' का नारा देने वाली प्रियंका अब मौका आने पर क्यों पीछे हट गईं? उम्मीद यही थी कि भारत जोड़ो यात्रा से हासिल आत्मविश्वास के बल पर राहुल फिर अमेठी से ही ताल ठोकेंगे, जबकि बेटी रायबरेली में मां की विरासत संभालेगी। अब तर्क दिया जा रहा है कि परिवार के सभी सदस्यों का चुनाव लडना सही नहीं होता। अगर सभी सदस्य सक्रिय राजनीति में आ सकते हैं, तब चुनाव भी लड़ लेने में क्या समस्या है? एक ओर यह तर्क दिया जा रहा है, तो दूसरी ओर प्रियंका के पति रॉबर्ट वाड्रा तक मीडिया इंटरव्यू के जरिये चुनाव लडने की अपनी इच्छा जताते रहे हैं।

सवाल यह भी है कि अगर राहुल दोनों सीटों से जीत गए तो उनके द्वारा खाली की जाने वाली सीट से क्या कोई पारिवारिक सदस्य चुनाव नहीं लड़ेगा? सीधा सवाल पूछें तो क्या दोनों जगह से जीत की स्थिति में राहुल द्वारा खाली की जाने वाली सीट से प्रियंका चुनाव नहीं लड़ेंगी? और क्या वह कभी चुनावी राजनीति में नहीं आना चाहतीं? बेशक कांग्रेस और राहुल गांधी को अपनी रणनीति तय करने का अधिकार है, लेकिन सार्वजनिक जीवन के फैसले पूरी तरह व्यक्तिगत नहीं हो सकते। उन पर टीका–टिप्पणी होगी ही क्योंकि उनका प्रभाव व्यापक होता है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव द्वारा पूर्ण सहयोग के आश्वासन के बावजूद अमेठी–रायबरेली की बाबत इन फैसलों से कांग्रेस की रक्षात्मक रणनीति का नकारात्मक संदेश ही गया है। इससे पहले सूरत एवं इंदौर में 'जयचंद–प्रकरण' और दिल्ली में बगावत तथा पश्चिम बंगाल में अधीर रंजन चौधरी सरीखे वरिष्ठ नेता की 'टी.एम.सी. से बेहतर होगा भाजपा को वोट देना' जैसी अपील से भी कांग्रेस के राजनीतिक प्रबंधन पर गंभीर सवाल उठे हैं। फिर भला विपक्ष का सबसे बड़ा दल होने के बावजूद कांग्रेस ने ऐसी रक्षात्मक रणनीति से नकारात्मक चुनावी राजनीतिक संदेश का जोखिम क्यों उठाया? चुनावी आकलन के दौरान यह आशंका जताई जाती रही है कि विपक्षी दलों के आधे–अधूरे बने 'इंडिया' गठबंधन की सबसे कमजोर कड़ी कांग्रेस ही साबित हो सकती है, क्योंकि लगभग 200 सीटों पर उसका भाजपा से सीधा मुकाबला होता है। क्षेत्रीय दल पहले भी भाजपा के विरुद्ध अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं। ऐसे में अंतिम परिणाम बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि खुद कांग्रेस, भाजपा के विरुद्ध कैसा चुनावी प्रदर्शन करेगी। अभी तक के संकेत बहुत सकारात्मक तो नहीं हैं।

बढते मानव तस्करी पर कब होगा नियंत्रण

—प्रियंका सौरभ—

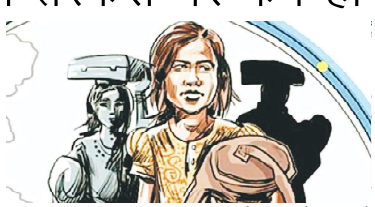

मानव तस्करी में बल, धमकी या जबरदस्ती जैसे तरीकों का उपयोग करके व्यक्तियों को परिवहन करना, भर्ती करना, स्थानांतरित करना, आश्रय देना और प्राप्त करना शामिल है। इन कृत्यों और साधनों का अंतिम उद्देश्य इन व्यक्तियों का शोषण के उद्देश्य से उपयोग करना है। इन व्यक्तियों का शोषण वेश्यावृत्ति, अंग व्यापार, यौन शोषण, जबरन श्रम, दासता और दासता जैसे विभिन्न अत्यंत अपमानजनक रूप लेता है। जिन व्यक्तियों की तस्करी की जाती है उनमें सबसे अधिक संख्या महिलाओं और बच्चों की होती है जिनका उपयोग विभिन्न अनैतिक प्रकार के श्रम या यौन शोषण के लिए किया जाता है। मानव तस्करी के मामले में भारत दुनिया के शीर्ष देशों में शामिल है और इसे मानव तस्करी का स्रोत, पारगमन और गंतव्य माना जाता है। किसी एक राज्य की सीमाओं के भीतर तथा अंतरराज्जीय मानव तस्करी के अलावा नेपाल और बांग्लादेश से अंतरराष्ट्रीय मानव तस्करी भी काफी लंबी खुली सीमा होने के कारण भारत में होती है। पश्चिम बंगाल मानव तस्करी का नया केंद्र बनकर उभरा है। भारत से पश्चिम एशिया, उत्तरी अमेरिका तथा यूरोपीय देशों में मानव तस्करी होती है। दुनियाभर में मानव तस्करी के पीड़ितों में एक–तिहाई बच्चे होते हैं।

एक अनुमान के अनुसार पिछले एक दशक में बांग्लादेश से लगभग 5 लाख महिलाएँ, लड़कियाँ और बच्चे अवैध रूप से भारत में लाए गए और यह संख्या साल–दर–साल बढ़ती ही जा रही है। यही कारण है कि पश्चिम बंगाल आज भारत का सबसे बड़ा सेक्स बाजार बनकर उभरा है और आँकड़े भी इस बात की गवाही देते हैं। देशभर के कोठों में देह व्यापार करने वाली जो लड़कियाँ रिहा कराई गईं, उनमें प्रति 10 लड़कियों में से 7 उत्तरी और दक्षिणी 24 परगना से लाई जाती हैं। इन लड़कियों में सबसे बड़ा डर पकड़े जाने का होता है, क्योंकि जब इन्हें रिहा कराकर घर वापस भेजा जाता है तो सामाजिक बदनामी से बचने के लिये परिवार वाले इन्हें स्वीकार करने से इनकार कर देते हैं।

पकड़े जाने से बचने के लिये इन लड़कियों के दलाल अपने रहने का ठिकाना और मोबाइल के सिम कार्ड लगातार बदलते रहते हैं। बांग्लादेश के साथ लगा बेनोपोल बॉर्डर मानव तस्करी के लिये दलालों द्वारा सर्वाधिक प्रयोग में लाया जाने वाला रास्ता है और बांग्लादेशी दलालों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में अपने मजबूत ठिकाने बना लिये है। बांग्लादेशी लड़कियों को आकर्षक रोजगार, वेतन और सुविधाओं के अलावा विवाह तथा फिल्मों में काम करने का लालच देकर भारत लाया जाता है, जहाँ मुंबई, हैदराबाद और बंगलूरु इनके पसंदीदा ठिकाने माने जाते हैं।

तस्करी उन स्थानों पर पनपती है जहां व्यापक गरीबी है। माता–पिता अपने बच्चों को बेच देते हैं क्योंकि गरीबी के कारण उनके पास कोई अन्य विकल्प नहीं बचता है, वे अक्सर सोचते हैं कि अपने बच्चों को बेचने से वे उन जगहों पर चले जाएंगे जो बहुत बेहतर हैं और जहां उनके जीवन में सुधार होगा। समाज के सबसे कमजोर वर्गों में से एक, जो तस्करी के प्रति अधिक संवेदनशील है, युवा महिलाएं हैं और ऐसा इसलिए है क्योंकि अधिकांश समाजों में सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से महिलाओं को अवमूल्यन और अवांछित माना जाता है और इस तरह वे तस्करी की प्रथा के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं।

उन जगहों से पलायन करने की इच्छा जहां उनका जीवन दयनीय है, व्यक्तियों को तस्करों से संपर्क करने के लिए तैयार करती है जो शुरुआती चरणों में उन्हें बेहतर जीवन के वादे के साथ लुभाते हैं, लेकिन एक बार जब पीड़ित उनके नियंत्रण में आ जाते हैं, तो उन्हें झुकाने के लिए जबरदस्ती के उपाय लागू किए जाते हैं। अन्य कारण हैं सीमाओं की छिद्रपूर्ण प्रकृति, भ्रष्ट सरकारी अधिकारी, अंतरराष्ट्रीय संगठित आपराधिक समूहों या नेटवर्क की भागीदारी और सीमाओं को नियंत्रित करने के लिए आग्रजन और कानून प्रवर्तन अधिकारियों की सीमित क्षमता या प्रतिबद्धता।

पिछले कुछ वर्षों में तस्करी का खतरा ड्रग सिंडिकेट के बराबर एक संगठित आपराधिक सिंडिकेट बन गया है। इसने पैसे और भ्रष्ट राजनेताओं की मदद से समाज में अपनी जड़ें गहरी जमा ली हैं। भारतीय कानूनी ढांचे में ठोस परिभाषाओं की कमी भी इस उद्देश्य में मदद करती है क्योंकि विभिन्न तस्कर कानूनी प्रणालियों में तकनीकी खामियों के आधार पर छूट जाते हैं। ठोस परिभाषाओं के बिना भी, कानून पर्याप्त होने चाहिए थे, लेकिन भारत में इन कानूनों के कार्यान्वयन में बहुत कुछ अधूरा रह गया है। सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर निगरानी की कमी ने तस्करों के लिए अपना व्यापार जारी रखने के लिए एक नया मंच खोल दिया है।

तस्करी की समस्या पर डेटा अपर्याप्त है, इसलिए तस्करों के पैटर्न और कार्य तंत्र उतने स्पष्ट नहीं हैं जितना होना चाहिए। यहां तक कि जब पीड़ितों को तस्करों से बरामद किया जाता है तो उनका पुनर्वास इस तरह से नहीं किया जाता है कि वे दोबारा तस्करी का शिकार न हों। मानव तस्करी का खतरा बहुत बड़ा है और न केवल ऐसे अपराधों को रोकने की जरूरत है बल्कि यह भी सुनिश्चित करने की जरूरत है कि राहत और पुनर्वास प्रक्रिया सुचारू रूप से हो। नीतियों में और सुधार करने की आवश्यकता है और विभिन्न एजेंसियों और हितधारकों द्वारा उचित कार्रवाई की जानी चाहिए। मानव तस्करी से सुरक्षा का अधिकार एक संवैधानिक अधिकार है।

देश के हर बच्चे, हर पुरुष और हर महिला को सम्मानजनक जीवन प्रदान करने के लिए इस अधिकार की रक्षा की जानी चाहिए। मानव तस्करी वर्तमान विश्व के सम्मुख उपस्थित कई बड़ी समस्याओं में से एक है। तमाम कोशिशों के बावजूद इसे रोक पाना संभव नहीं हो पा रहा है और न केवल अल्प–विकसित और विकासशील देश बल्कि विकसित राष्ट्र भी इस समस्या से अछूते नहीं है। मानव तस्करी भारत की भी प्रमुख समस्याओं में से एक है।

खुद को सही साबित करते राहुल गांधी

—आर. जगननाथन—

एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिस पर अक्सर राजनीति में अपने थीम गीत, रणनीति और समय को गलत करने का आरोप लगाया जाता है, वह व्यक्ति राहुल गांधी ने इस बार रायबरेली से लोकसभा चुनाव लडने की मांग करके इसे बिल्कुल सही कर दिया है। इससे पहले, जब उनकी पार्टी 2022 में गुजरात में बुरी तरह हार रही थी, तब वह अपनी दक्षिण–उत्तर भारत जोड़ो यात्रा करने में व्यस्त थे। लेकिन, दूसरे पूर्व–पश्चिम चरण में, लोकसभा चुनाव कार्यक्रम की घोषणा होने पर उनकी यात्रा समाप्त हो गई। उन्होंने जान लिया है कि लोगों से जुडने के लिए यात्रा बहुत अच्छी हो सकती है, लेकिन वास्तविक चुनाव में अपनी पार्टी की मदद के लिए उन्हें और भी बहुत कुछ करना होगा।

सामरिक विकल्प – जबकि मीडिया में अटकलें उनकी उम्मीदवारी को लेकर चारों ओर हैं और इस बात के इर्द–गिर्द घूमती है कि क्या वह अमेठी में स्मृति ईरानी के साथ दोबारा मुकाबला करना चाहेंगे या नहीं, जहां वह 2019 में हार गए थे। रायबरेली की पसंद 2 चीजों का संकेत देती है। यू.पी. में जीत या हार के राजनीतिक परिणामों के बारे में जागरूकता, और यह भी कि उन्हें लंबी अवधि के लिए पार्टी का आधार बढ़ाने की जरूरत है। बेशक, उन्हें अभी भी वायनाड में अपने मतदाताओं को कुछ समझाना होगा, जहां 26 अप्रैल को मतदान हुआ था और जहां वह जीत सकते हैं, लेकिन यह बाद के लिए एक समस्या है। वायनाड में अपना नामांकन दाखिल करते समय, उन्होंने इसे अपना घर कहा और लोगों को अपना परिवार। यदि वह रायबरेली जीतते हैं, जहां फिर से उनकी संभावनाएं अच्छी लगती हैं, तो उन्हें एक कठिन विकल्प चुनना होगा।

2019 की मोदी लहर के बीच यू.पी. में कांग्रेस ने जो सीट जीती, उसमें पार्टी को अपने निकटतम भाजपा प्रतिद्वंद्वी पर 1,67,000 से अधिक वोटों की बढ़त थी। राजनीतिक लागत–लाभ की गणना इस बार स्पष्ट रूप से अमेठी के मुकाबले रायबरेली के पक्ष में रही। स्पष्ट रूप से, राहुल को एहसास है कि उन्हें न केवल अपनी सीट जीतनी है, बल्कि यू.पी. में अपनी पार्टी की वृद्धि भी फिर से सुनिश्चित करनी है। भले ही पार्टी इस बार बहुत अधिक सीटें नहीं जीत पाई है, फिर भी उसे राज्य में बीच–बचाव की जरूरत है। कांग्रेस पार्टी ने 2009 के चुनावों में यू.पी. से 21 सीटें जीतीं, जिससे साबित हुआ कि यह अधिक आबादी वाला राज्य (अविभाजित आंध्र के अलावा) उसके लिए महत्वपूर्ण था। यू.पी. में 2014 कांग्रेस के विघटन की शुरुआत हुई।

अंत में, कुछ लड़ाई – कांग्रेस के लिए यह मानना मूर्खतापूर्ण है कि वह स्वयं रायबरेली में बढ़त पर है। भाजपा चुनावी लड़ाई को आसान बनाने के लिए कोई भी कदम उठाना नहीं छोड़ेगी। लेकिन, जीतें या हारें, राहुल ने अपनों को कड़ा संदेश दे दिया है। राहुल गांधी को 4 जून को अपनी पार्टी के लिए बेहद सकारात्मक परिणाम देने होंगे, जब नतीजे सामने आएंगे। लेकिन उन्होंने जो किया है उससे पता चलता है कि वह लंबे समय से इसमें हैं और एक रात में ही काम करने वाले नहीं हैं। भारत जोड़ो यात्रा से पहले और उसके बाद भी, उनकी लंबे समय तक देश से गायब रहने की प्रवृत्ति रही है।

उदासीन क्यों हैं युवा मतदाता

—प्रफुल्ल गोराडिया—

मतदाताओं में बड़ी संख्या युवा पीढ़ी की है। मगर चुनावी प्रक्रिया के प्रति उनकी उदासीनता का कारण क्या है। देश अधिकाधिक अपने युवा नागरिकों का है। इसलिए यह और भी अधिक परेशान करने वाली बात है कि जिन युवाओं ने हाल ही में 18 वर्ष की आयु पार कर ली है और उन्होंने खुद को कम संख्या में मतदाता के रूप में पंजीकृत कराया है। 50 साल के व्यक्ति को समय के हिसाब से 5, संभवतरू 6 और आम चुनाव देखने को मिल सकते हैं। हमारे सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में केवल 25 प्रतिशत योग्य युवाओं ने खुद को मतदाता के रूप में पंजीकृत कराया है। अपने देश के संचालन में अपनी भागीदारी निभाने की इच्छा की कमी के क्या कारण हो सकते हैं? क्या अधिकांश युवा उम्मीद करते हैं कि सरकारी प्रतिनिधि उनसे पुराने माई–बाप के अंदाज में संपर्क करेंगे? या फिर उन्हें लगता है कि उनके वोटों के लिए राजनीतिक दलों के बीच ज्यादा प्रतिस्पर्धा होने की संभावना नहीं है? क्या ऐसा भी हो सकता है कि युवा पीढ़ी में पूरी राजनीतिक प्रक्रिया और लोकतंत्र की संस्था के प्रति उदासीनता आ गई हो?

पिछले कुछ वर्षों में, देश के युवाओं का एक बड़ा वर्ग यह मानने लगा है कि जो भी सत्ता में आएगा उससे उनके जीवन में कोई फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि देश के राजनेताओं को एक ऐसा वर्ग माना जाता है जो केवल अपने हित में कार्य करता है। हालांकि, इस संशय में, युवा यह भूल जाते हैं कि अपनी उदासीनता के कारण, वे अपने राष्ट्र को चलाने में अपनी भागीदारी का अधिकार त्याग देते हैं। देश के जीवन में सार्थक भूमिका निभाने में आवश्यक रुचि उस सीमा तक नहीं रही रू उम्र के दूसरे पड़ाव पर, राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने और देश के जीवन में सार्थक भूमिका निभाने में आवश्यक रुचि उस सीमा तक नहीं रही है, जितनी अपेक्षित है। राजनीतिक प्रकृति का सार्वजनिक जीवन स्वतंत्रता से पहले लगभग 50 वर्षों तक अस्तित्व में था। इसकी शुरुआत 1885 में एक सेवानिवृत्त ब्रिटिश नौकरशाह, एलन ऑक्टेवियन ह्यूम द्वारा कांग्रेस की स्थापना के साथ हुई। मुस्लिम लीग की स्थापना वर्ष 1906 में, हिंदू महासभा की 1916 में और कम्युनिस्ट पार्टी की 1925 में हुई। इसलिए, भारतीयों को राजनीतिक सार्वजनिक जीवन का अनुभव करने का अवसर मिला। प्रेरणा शक्ति नहीं, बल्कि देश की आजादी के लिए आदर्शवाद से प्रेरित इच्छा थी। इसके तुरंत बाद, मोहभंग हो गया होगा। पहले का आदर्शवाद तेजी से घटने लगा। गिरावट के साथ देश में नैतिक और सामाजिक मूल्यों में गिरावट देखी गई।

राजनेताओं से मोह भंग रू क्या यह मोहभंग राजनेताओं की गुणवत्ता से निराशा के कारण हुआ होगा? वास्तव में सभी पार्टियों में समाज के सबसे शिक्षित या जानकार वर्गों से आने वाले सदस्य नहीं होते हैं। हालांकि वर्तमान केंद्र सरकार देश पर शासन करने वाली अब तक की राजनीतिक व्यवस्थाओं के बराबर नहीं है, फिर भी यह राजनेताओं और आम तौर पर राजनीति के बारे में संशय को दूर करने में सक्षम नहीं है, जो बड़े पैमाने पर लोगों के मन में हावी है। इसका मतलब यह नहीं है कि अच्छे लोगों को राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं है। हमने हाल के वर्षों में कई शैक्षणिक और व्यावसायिक रूप से योग्य लोगों को राजनीति में प्रवेश करते देखा हैय उनमें से कुछ तो मंत्री भी बन गए हैं। लेकिन स्पष्ट रूप से, इस संबंध में अभी एक लंबा रास्ता तय करना है। एक बड़ी निराशा एक निर्वाचन क्षेत्र में लोगों की संख्या के साथ–साथ चुनाव–प्रचार की उच्च लागत है। उम्मीद है कि चुनावी निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन से इस समस्या का कुछ समाधान सामने आएगा, जिसमें लगभग 50 प्रतिशत की बढ़ोतरी तय है। कोई भी सामान्य उम्मीदवार प्रति सीट लगभग 2 मिलियन मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के लिए इतनी बड़ी रकम खर्च नहीं कर सकता।

अमीर उम्मीदवारों का राजनीति के प्रति आकर्षण – केवल परिसीमन और बढ़ी हुई सीटों से चुनाव खर्च की समस्या का समाधान नहीं होगा। अमीर उम्मीदवारों के राजनीति की ओर आकृष्ट होने का एक और कारण यह पारंपरिक मान्यता है कि एक बार निर्वाचित होने के बाद, उम्मीदवार चुनाव–प्रचार पर खर्च किया गया पैसा वापस पाने में सक्षम होगा और उसके बाद बहुत पैसा कमाएगा।

भाजपा ने नौतनवा में बूथ अध्यक्ष सम्मेलन आयोजित कर बनाई रणनीति

संवाददाता–महराजगंज। नौतनवा कस्बे के एक मैरेज हॉल में रविवार को भारतीय जनता पार्टी का बूथ अध्यक्ष सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रमापति राम त्रिपाठी ने कहा कि देश की जनता मोदी सरकार को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का मन बना चुकी है। भाजपा ने देश के गरीब, किसान, मजदूर समाज के लिए अनेक कल्याणकारी योजना चलाकर उन्हें सशक्त बनाने का काम किया है। महाराजगंज जनपद में छह लाख किसानों को सम्मान निधि का लाभ मिल रहा है। बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं को सरकार की उपलब्धियां प्रत्येक घर पहुंचने की जरूरत है।

केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने कहा कि मोदी सरकार ने देश जरूरतमन्दों के लिए आवास, शौचालय, राशन, किसान सम्मान निधि एव आयुष्मान योजना के तहत मुफ्त इलाज देने का काम किया है। आज विपक्ष हताश हो चुका है। देश की जनता विपक्ष के झूठे वादों को समझ चुकी है और मोदी की गारंटी पर जनता को पूरा भरोसा है। विधायक ऋषि त्रिपाठी ने कहा कि भाजपा की सरकार में पूरा प्रदेश भय मुक्त हो चुका है। योजनाओं का लाभ गांव तक पहुंच चुका है। किन्ही कारण से जो लोग योजनाओं से वंचित रह गए हैं, उन्हें निश्चित ही सरकार बनते ही योजनाओं का लाभ पहुंचने लगेगा।

इस दौरान जिलाध्यक्ष संजय पांडेय, ब्लाक प्रमुख राकेश मद्धेशिया, अरुण शुक्ला, प्रदीप सिंह, जितेंद्र जायसवाल, हरिशंकर जायसवाल, पूर्व चेयरमैन गुड्डू खान, छट्टे लाल निगम, रामदयाल मौर्य, विवेकानंद पांडेय, प्रभाकर द्विवेदी, दीपक त्रिपाठी, बबलू सिंह, लालचंद चौधरी, बृजेंद्र श्रीवास्तव, उमेश जायसवाल, राहुल गौड़ आदि लोग मौजूद रहे।

प्रशासन एकादश ने जीता मैत्री मैच

संवाददाता–गोंडा। मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत मेरा गोंडा, मेरी शान स्वीप टीम की ओर से आयोजित प्रेस फ्रीडम डे के अवसर पर शहर के अदम गोंडवी मैदान में मीडिया एकादश और प्रशासन एकादश के बीच मैत्री मैच का शाम छह बजे से आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि मंडलायुक्त योगेश्वर राम मिश्रा और डीएम नेहा शर्मा ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई गई। मंडलायुक्त ने कहा कि लोकतंत्र के महापर्व पर मतदान का हिस्सा जरूर बने। उन्होंने क्रिकेट टीम के हौसला अफजाई करते हुए कहा कि जिंदगी में ये हुनर भी आजमाना चाहिए, जंग अगर अपनों से हो तो हार जाना चाहिए। दोनों टीमों के खिलाडियों ने तालियों की गड़गड़ाहट कर स्वागत किया। मंडलायक्त ने प्रशासन एकादश और मीडिया एकादश के कप्तान के बीच सिक्का उछालते हुए टॉस कराया गया। जिसमे प्रशासन एकादश के कप्तान सीआरओ महेश प्रकाश ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। इसके बाद मंडलायुक्त ने फीता काटकर मैच का शुभारंभ किया। प्रशासन एकादश टीम ने पन्द्रह ओवर में सात विकेट पर 165 रन बनाए थे। जिसके लक्ष्य का पीछा करने उतरी मीडिया एकादश टीम 13. 4 ओवर में 128 रन पर आल आउट हो गई। जिससे प्रशासन एकादश की टीम ने मैच जीत लिया। दोनो टीमों के बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को डीएम नेहा शर्मा सम्मानित किया। मैच में कमेंट्री पीडी डीआरडीए चंद्र शेखर, प्रत्यूषराज ने की।

मुंबई में काम करने वाले तीन नौकरों ने करोड़ों के जेवर और नगदी पर हाथ किया साफ, चढ़े पुलिस के हत्थे

संवाददाता–गोण्डा। मुम्बई से करोड़ों की सम्पति चोरी कर भागे आरोपियों को गिरफ्तार करने में कटरा बाजार व महाराष्ट्र पुलिस की संयुक्त टीम को कामयाबी मिली है। पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार करके करीब एक करोड़ रुपये के सोने, चांदी व हीरे के गहनों के साथ 1.45 लाख रुपये बरामद किए हैं।

प्रभारी निरीक्षक संजय गुप्ता ने बताया कि राजगीर अपार्टमेंट थाना खार वेस्ट मुम्बई निवासी साहिल अनील गोयल ने वहां के थाने पर बीते 26 अप्रैल को सूचना दी कि उनके घर पर तीन नौकर झाड़ू–पोछा, रसोइया का काम करते थे। 22 अप्रैल को वह अपनी पत्नी के साथ अपने दोस्त की शादी की सालगिरह मनाने गोवा चले गए थे। 25 अप्रैल को घर वापस आने पर साहिल अनील गोयल शयनकक्ष में लगी लकड़ी की दोनों अलमारियां खुली हुई थीं और आभूषणों के खाली डिब्बे बिस्तर पर पड़े हुए थे। दोनों अलमारी टूटी थीं और उसमें रखे छह सात लाख रूपये नगद व सारे जेवरात जिसमें सोने के हार, चूड़ियां, झुमके सहित डायमंड के आभूषण चोरी हो गयी है। इस पर मुंबई के थाना खार वेस्ट मुम्बई में मुकदमा पंजीकृत हुआ था। थाना खार पुलिस ने विवेचना व अन्य संकलित साक्ष्यों के आधार पर आरोपियों की लोकेशन जनपद गोण्डा के थाना कटरा बाजार का होना पाया गया। इस पर मुंबई पुलिस ने गोण्डा पुलिस से संपर्क किया। मुंबई पुलिस, गोण्डा पुलिस तथा सर्विलांस की सयुक्त टीम द्वारा घटना के सफल अनावरण के लिए कई दिनों से स्थानीय थानाक्षेत्र के कई ठिकानों पर छापेमारी कर रही थी। रविवार को घटना में संलिप्त नामजद व प्रकाश में आये अभियुक्तों निरंजन पुत्र रामा बहेलिया, रामचेलवा पुत्र मैकू पासवान तथा जयप्रकाश पुत्र हरिशंकर रस्तोगी को गिरफ्तार करने में कामयाब रही है। इनके कब्जे से चोरी के 1,45,900 हजार रूपये नकद व लगभग एक करोड़ एक लाख के सोने, चांदी व हीरे के आभूषण बरामद किया गया। इन सभी आरोपियों के विरुद्ध चोरी करने के साथ साथ योजनाबद्ध तरीके से चोरी करने और माल छुपाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश कर ट्रांजिट रिमांड लेकर मुंबई पुलिस महाराष्ट्र रवाना हो गई है। इस पूरे अभियान को सफल बनाने में प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार गुप्ता, मुंबई पुलिस के उप निरिक्षक हनुमन्त कुम्भारे एवम् उनकी सर्विलांस टीम का विशेष योगदान रहा है। सर्राफ की दुकान पर बरामद हुए जेवररू महाराष्ट्र व यूपी पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में सर्राफा व्यवसायी की दुकान से करोड़ों के जेवर बरामद हुए। बीते शनिवार दोपहर पुलिस टीम ने दुकान पर छापेमारी की जिसमें चोरी के गहने व आभूषण बरामद हुए। महाराष्ट्र पुलिस ने एक महिला व शाहजोत गांव के एक युवक को साथ में लेकर आई थी। छापेमारी के दौरान दुकान के सामने काफी भीड़ लग गई पुलिस के रौब झाड़ने पर भीड़ तितर बितर हुई।

तेज रफ्तार कार पान डाबली में घुसी, दुकानदार घायल

संवाददाता–बलरामपुर। स्थानीय बाजार स्थित मुजहनी मार्ग पर रविवार सुबह तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर पान ढाबली में जा घुसी। हादसे में दुकानदार घायल हो गया। चालक मौके से कार छोड़कर फरार हो गया। घायल को सीएचसी श्रीदत्तगंज में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने दुकानदार की तहरीर पर मुकदमा पंजीकृत कर कार कब्जे में लेकर जांच कर रही है। मुजहनी की ओर तेज रफ्तार जा रही कार अचानक अनियंत्रित होकर एक पान ढाबली में जा घुसी। टक्कर इतनी तेज थी कि ढाबली पूरी तरह से टूट गई। हादसे में पान ढाबली दुकानदार हबीबुल्लाह पुत्र जमील को गंभीर चोटें आई हैं। स्थानीय लोगों की मदद से हबीबुल्लाह को सीएचसी श्रीदत्तगंज में भर्ती कराया गया है। थाना प्रभारी अनिल कुमार दीक्षित ने बताया कि दुकानदार की तहरीर पर केस दर्ज कर लिया गया है। कार को कब्जे में लेकर जांच की जा रही है।

फांसी के फंदे से लटकी मिली मजदूर की लाश

संवाददाता–श्रावस्ती। पानी टंकी निर्माण कार्य में मजदूरी कर रहे एक मजदूर की लाश संदिग्ध परिस्थितियों में फंदे से लटकी पाई गई। शव देख लोगों की ओर से घटना की सूचना पुलिस को दी गई। घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने शव को फंदे से उतरवाकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। कोतवाली क्षेत्र भिनगा के भिट्ठी गांव के बाहर पानी टंकी का निर्माण कराया जा रहा है। जिसमें सीतापुर जनपद के ग्राम लालपुर निवासी राज कुमार (32) राम प्रसाद मजदूरी कर रहा था। रविवार सुबह संदिग्ध परिस्थितियों राज कुमार की लाश भवन के खिड़की के सहारे गमछे के फंदे से पम्प हाउस में लटक रही थी। शव लटकता देख घटना की सूचना पुलिस को दी गई। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने शव को फंदे से उतरवाकर कब्जे में ले लिया। इसके बाद पंचनामा कर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बताया जाता है कि राज कुमार किसी ठेकेदार के साथ मजदूरी के लिए श्रावस्ती आया था। भिट्ठी में अन्य मजदूरों के साथ वह भी पानी टंकी निर्माण कार्य में काम कर रहा था। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

संदिग्ध परिस्थितियों में रेलवे ट्रैक पर पड़ा मिला जीजा–साली का शव

संवाददाता–बलरामपुर। जीजा–साली का शव संदिग्ध परिस्थितियों में रविवार सुबह 11 बजे पचपेड़वा रेलवे स्टेशन से चार किलोमीटर पहले शंकरपुर गांव के निकट रेलवे ट्रैक पर पड़ा मिला है। जीजा अपनी साली को बाइक पर बैठाकर शनिवार सुबह आठ बजे उसके घर छोड़ने गया था। दोनों की मौत गोरखपुर से चलकर मैलानी जाने वाली ट्रेन संख्या–15009 से होने की बात कही जा रही है। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। मामले की छानबीन शुरू कर दी गई है। लालपुर भुवनडीह निवासी 35 वर्षीय हरीराम पुत्र राम गुलाम की शादी 15 साल पहले स्थानीय थाना क्षेत्र के एक गांव में हुई थी। 28 अप्रैल को हरीराम के भतीजे की शादी थी, जिसमें उसकी 17 वर्षीय साली भी शामिल होने आई थी। शनिवार सुबह आठ बजे हरीराम अपनी साली को बाइक से उसके घर छोड़ने के लिए निकला था। रात नौ बजे तक दोनों घर नहीं पहुंचे तो हरीराम के ससुराली जनों ने उनकी तलाश शुरू की। रातभर खोजबीन चलती रही, लेकिन उनका पता नहीं चल सका। सुबह शंकरपुर के कुछ लोगों ने रेलवे ट्रैक पर किशोरी व युवक का शव पड़े होने की सूचना प्रभारी निरीक्षक अवधेश राज सिंह को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर हरीराम की तलाशी ली तो उनकी जेब में आधार कार्ड मिला। शंकरपुर के निकट पेट्रोल पंप पर बाइक भी खड़ी मिल गई। आधार कार्ड के जरिए हरीराम की पहचान हो गई। घटना की जानकारी हरीराम के पिता राम गुलाम को दी गई। पुलिस ने शवों का पंचनामा तैयार कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

हरीराम की शादी को 15 वर्ष बीत गए लेकिन उसकी पत्नी सीमा को कोई संतान नहीं हुई। इस बात को लेकर घर वाले काफी परेशान चल रहे थे। भतीजे की शादी में हरीराम काफी खुश था। घर का माहौल भी खुशनुमा था। घटना की खबर मिलते ही घर में कोहराम मच गया। घर के पुरुष सदस्य पोस्टमार्टम कराने चले गए। जबकि महिला सदस्यों का रो–रोकर बुरा हाल है। किसी की समझ में यह नहीं आ रहा है कि दोनों रेलवे ट्रैक पर क्यों गए। प्रभारी निरीक्षक अवधेश राज सिंह ने बताया कि मामला प्रथम दृष्टया आत्महत्या का प्रतीत होता है। रेलवे विभाग से भी इस बात की जानकारी मिली है। मामले की छानबीन की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई आगे बढ़ाई जाएगी।

छह सौ परिक्रमार्थियों का जत्था परसपुर क्षेत्र में पहुंचा

संवाददाता–गोण्डा। अयोध्या धाम से संत महात्माओं के सानिध्य में बारह दिन पूर्व जिला बस्ती के मखौड़ा धाम से हनुमान मंडल के नेतृत्व में शुरु हुई चौरासी कोसी परिक्रमा के छह सौ भक्तों का पहला जत्था रविवार को घाघरा नदी पार करके परसपुर ब्लॉक के ग्राम बहुवन मदार मांझा के दुलारे बाग पहुंचा। वहीं महंत गयादास के अगुवाई में एक हजार परिक्रमाथियों का दूसरा जत्था मंगलवार को दुलारे बाग पहुंचेगी।

गांव के समाजसेवी भूलन सिंह व अयोध्या प्रसाद यादव ने हनुमान मंडल के प्रमुख सुरेन्द्र सिंह सहित परिक्रमार्थियों का माल्यार्पण कर गर्म जोशी से स्वागत किया। साथ ही श्रद्धालुओं के जल–पान की व्यवस्था दी।

मंडल के प्रमुख ने प्रशासन की व्यवस्था को नकाफी बताया है। गत वर्ष की भांति अयोध्या तीर्थ स्थल से प्रारंभ हुए चौरासी कोसी परिक्रमा में नेपाल सहित कई प्रदेश के शामिल हुए संत महात्मा तप कर पुण्य लाभ अर्जित कर रहे है। रविवार से गोंडा जिले में विभिन्न परिक्रमार्थियों के जत्थे का आना शुरू हो गया है। अलग–अलग जत्थों का क्षेत्र के परिक्रमा मार्ग में शामिल धार्मिक स्थलों पर तकरीबन तीन से चार दिन पड़ाव के साथ रात्रि विश्राम होगा। चौबीस अप्रैल को मखौड़ा धाम से हनुमान मंडल के प्रमुख की अगुवाई में शुरु हुई परिक्रमा का जत्था बारहवें दिन घाघरा नदी के मूर्तिहन घाट पार करके परसपुर के दुलारे बाग पहुंचा। यहां रात्रि विश्राम के बाद अगले पड़ाव के लिए मंगलवार की सुबह जत्था– चरसड़ी ब्रहमचारी, रामजानकी मंदिर भौरीगंज, जम्बू तीर्थ, तुलसीदास जन्मस्थली ग्राम राजापुर, खैरा वृन्दावन, सूकरखेत बाराह देव व नरिहरि दास आश्रम होते हुए बखरिया शक्ति पीठ मां बाराही के लिए रवाना होगा। मथुरा से छित्ररिया दास, रामेश्वरम से कमलदास, नेपाल जनकपुर के उपेन्द्र दास व पवनदास ने बताया कि पगयात्रा से उन्हें सुख समृद्धि की अनुभूति होती है। उन्होंने बहुवन मांझा क्षेत्र में खस्ताहाल सड़कों को ठीक कराने की प्रदेश सरकार से मांग की है। मंडल के प्रमुख ने प्रशासन पर बिजली, पानी, खानपान व पंडाल न लगवाए जाने का आरोप लगाया है।

तहसीलों को जोड़ने वाली सड़क बदहाल, चलना दुश्वार

संवाददाता–श्रावस्ती। दो तहसीलों को आपस में जोड़ने वाले मुख्य मार्ग की सड़क बदहाल हो गई है जिस पर सफर करने में लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। सड़क जगह जगह उजड़ कर बिखर गई है लेकिन मरम्मत नहीं कराई जा रही है। जमुनहा तहसील क्षेत्र के कानीबोझी चौराहे से राप्ती बैराज होते हुए भिनगा को जोड़ने वाले मुख्य मार्ग की सड़क टूटकर बदहाल हो गई है। नहर की पटरी पर बनी सड़क जगह जगह उजड़कर बिखर चुकी है। सड़क में अनगिनत गड्ढे हैं जो लोगों के सफर में सबसे बड़ी बाधा बन रहे हैं। यह सड़क दो तहसीलों के साथ ही जमुनहा तहसील को जिला मुख्यालय से जोड़ती है। सुबह से देर रात तक लोगों का आवागमन होता है। प्रतिदिन छोटे बड़े वाहन इसी मार्ग से आवागमन करते हैं। लेकिन सड़क की बदहाली के चलते लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। सड़क के गड्ढों में फंसकर आए दिन बाइक सवार हादसे का शिकार हो रहे हैं। सड़क की बदहाली का आलम यह है कि पैदल चलना भी मुश्किल रहता है। इसके बाद भी जिम्मेदार सड़क की मरम्मत कराने की जहमत नहीं उठा रहे हैं जिम्मेदारों की उपेक्षा का खामियाजा लोगों को भुगतना पड़ रहा है। लोगों ने सड़क की मरम्मत कराने की मांग की है।

439 परीक्षार्थियों ने दी नीट की परीक्षा, आठ गैरहाजिर रहे

संवाददाता–श्रावस्ती। श्रावस्ती में नीट (एनईईटी)की परीक्षा शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हुई। जिले में बनाए गए एक परीक्षा केन्द्र पर 439 परीक्षार्थी परीक्षा में शामिल हुए जबकि आठ परीक्षार्थियों ने परीक्षा छोड़ दी। जिले में नीट की परीक्षा के लिए केन्द्रीय विद्यालय भिनगा को परीक्षा केन्द्र बनाया गया था। जहां रविवार को एक पाली में नीट की परीक्षा आयोजित हुई। परीक्षा में कुल 447 परीक्षार्थी पंजीकृत थे। जिसके सापेक्ष 439 परीक्षार्थी परीक्षा देने पहुंचे जबकि आठ परीक्षार्थी अनुपस्थित हो गए। कड़ी सुरक्षा में परीक्षा कराई गई। परीक्षा से पहले साढ़े 11 बजे से सघन तलाशी के बाद परीक्षार्थियों को मुख्य गेट से प्रवेश दिया गया। इसके बाद सभी परीक्षार्थियों की बायोमैट्रिक उपस्थिति दर्ज की गई और एक–एक कर सभी परीक्षार्थियों को परीक्षा कक्ष में भेजा गया। दो बजे से परीक्षा प्रारम्भ होकर 5.20 बजे तक परीक्षा सम्पन्न कराई गई। परीक्षा के दौरान सचल दल की टीम बारी बारी से निरीक्षण करती रही है। परीक्षा के दौरान जवाहर नवोदय विद्यालय के प्राचाय एके सिंह जिला समन्वयक के रूप में तैनात रहे। वहीं केन्द्र व्यवस्थापक अशोक कुमार द्विवेदी प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय, उपकेन्द्र व्यवस्थापक अभिनव चतुर्वेदी वरिष्ठ शिक्षक केन्द्रीय विद्यालय व आब्जर्वर के रूप में प्रधानाचार्य लव विद्यापीठ अनुराग पाठक मौजूद रहे।

नियम उल्लंघन पर 43 वाहनों का चालान

संवाददाता–श्रावस्ती। यातायात नियमों का पालन कराने को लेकर पुलिस की ओर से वाहन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत एसपी के निर्देशन में विभिन्न थाना क्षेत्रों में पुलिस की ओर से वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया जिसमें विभिन्न स्थानों पर स्थित बैरियर व चेक पोस्ट पर चेकिंग लगाकर वाहनों के कागजात, तीन सवारी, हेलमेट की जांच की गई। इस दौरान 43 वाहनों को यातायात नियमों का उल्लंघन करते पाया गया। जिनका मोटर अधिनियम के तहत ई–चालान कर एक लाख 19 हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया।

हीट वेव से मतदाताओं को हो सकती है समस्या, बरतें सावधानियां

संवाददाता–देवरिया। मुख्य निर्वाचन अधिकारी द्वारा लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत मतदेय स्थलों पर सुनिश्चित न्यूनतम सुविधायें तथा भीषण गर्मीध्लू से बचाव सम्बन्धी व्यवस्थायें उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। ग्रीष्म ऋतु में भीषण गर्मी, लू व हीट वेव के कारण मतदाताओं को स्वास्थ्य जनित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसके लिए आवश्यक निर्देश जारी किया है। उप जिला निर्वाचन अधिकारीध्अपर जिलाधिकारी प्रशासन गौरव श्रीवास्तव ने बताया है सीईओ का निर्देश है कि इनसे बचते हुए अधिकाधिक संख्या में मतदेय स्थलों पर पहुँचकर मतदान करने के लिए मतदान दलों एवं मतदाताओं के मध्य सावधानियों के बारे में जागरुकता सुनिश्चित किया जाए। 1 जून को मतदान की तिथि है। इन दिवसों पर भीषण गर्मी की सम्भावना है। पोलिंग पार्टी प्रस्थान एवं मतदान दिवसों पर सभी मतदान कार्मिक हल्के सूती वस्त्रों का प्रयोग करें एव अपने साथ तेज धूप से बचाव हेतु छाता एवं सर को ढकने के लिए सफेद सूती गमछा या अन्य कोई कपड़ा रखें। पैरों में आरामदायक जूते या चप्पल पहनें। अपने साथ पीने योग्य शीतल जल का बोत्तल रखें, समय–समय पर आवश्यकतानुसार सादा जल, नींबू पानी या ओआरएस का प्रयोग कर अपने आपको तरो ताजा रखें। तेज धूप से बचने हेतु टोपी, हैट, काला चश्मा, छाता आदि का प्रयोग करें। अत्यधिक चाय, कॉफी या कार्बोनेटेड सॉफ्ट ड्रिंक का सेवन न करें, इनसे शरीर में पानी की मात्रा कम होने की संभावना रहती है। बासी भोजन से बचें, हल्के एवं ताजे बने भोजन लें। प्रत्येक मतदान दल को फर्स्ट एड किट प्रदान की जाएगी। आवश्यकतानुसार उसमें उपलब्ध ओआरएस मतदान दल के कर्मियों अथवा जरूरतमंद मतदाताओं को मानक के अनुसार जल में घोलकर पिला दें। प्रत्येक मतदेय स्थल पर न्यूनतम 5उ • 5उ क्षेत्रफल के छाया की व्यवस्था करा दें तथा वहां पर्याप्त संख्या में कुर्सी, दरी आदि रखवा दें ताकि तेज धूप से बचने के लिए मतदाता अपनी बारी आने तक छाया में इंतजार कर सकें। छाया की व्यवस्था इस प्रकार करें कि मतदेय स्थलों के ठीक सामने लगने वाली कतार छाया में ही स्थित हो। बुजुर्गों, महिलाओं जिनके साथ छोटे बच्चे हों तथा व्यक्तियों के लिए मतदान में प्राथमिकता दी जाए ताकि उन्हें भीषण गर्मी में अधिक देर तक अपने घर के बाहर न रहना पड़े। ऐसे मतदाताओं के लिए प्रत्येक 4–5 मतदाताओं के उपरान्त कुर्सी की व्यवस्था भी कतार के बगल में रखी जाए ताकि उन्हें अधिक असुविधा का सामना न करना पड़े। मतदान केन्द्र पर हर हाल में पेयजल की उपलब्धता रहे, यथासभव कतारबद्ध वरिष्ठ नागरिकों, निःशक्तजनों आदि के लिए स्वयंसेवियों के माध्यम से लगातार पानी पिलाने की व्यवस्था भी की जाए।

अदालती नोटिस
(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)
न्यायालय–सिविल जज (जू.डि.) सदर महोदय फैजाबाद
मूल वाद संख्या 1490 / 2021
जगदीश आदि
बनाम
अर्जुन कुमार आदि
बनाम–1– अर्जुन कुमार सिंह पुत्र हरीश पाल सिंह 2– राम कुमार वर्मा पुत्र चिन्ता प्रसाद 3– रामतीरथ वर्मा पुत्र भगवानदास 4– परशुराम 5– विशाल कुमार 6– कपिलदेव पुत्रगण अम्बिका प्रसाद समस्त निवासीगण ग्राम– देवराकोट परगना मगलसी तहसील सोहावल जनपद– अयोध्या
तारीख पेशी 30–05–2024
चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 05 के 30 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।
मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस
(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)
न्यायालय–सिविल जज (जू.डि.) सदर महोदय फैजाबाद
मूल वाद संख्या 150 / 2023
राम यज्ञ आदि
बनाम
प्रवीण कुमार सिंह आदि
बनाम–1– प्रवीण कुमार सिंह 2– प्रद्युम्न कुमार सिंह पुत्रगण स्वर्गीय दान बहादुर सिंह निवासी ग्राम– बरई पारा पोस्ट– मयाबाजार परगना अमसिन तहसील सदर जनपद– अयोध्या
तारीख पेशी 16–05–2024
चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 05 के 16 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।
मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस
(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)
न्यायालय–मुख्य राजस्व अधिकारी महोदय अयोध्या
वाद– दायर
कनक बिहारी आदि
बनाम
प्रेमचन्द्र सिंह आदि
बनाम–1– प्रेमचन्द्र सिंह 2– अनिल कुमार सिंह 3– सुनील कुमार सिंह पुत्रगण स्वर्गीय अकबाल बहादुर सिंह निवासी ग्राम– पिलखांवा परगना मगलसी तहसील सोहावल जनपद– अयोध्या
तारीख पेशी 13–05–2024
चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 05 के 13 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।
मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस
(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)
न्यायालय–सिविल जज (जू.डि.) सदर महोदय फैजाबाद
मूल वाद संख्या 100 / 2010
श्याम बिहारी आदि
बनाम
दुखी आदि
बनाम–1– गुलाबा पत्नी फयादीन 2– शिवकेश 3– शिवराम पुत्रगण फयादीन निवासीगण ग्राम– सारी परगना पश्चिम राठ तहसील मिल्कीपुर जनपद– अयोध्या
तारीख पेशी 11–05–2024
चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 05 के 11 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।
मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस
(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)
न्यायालय–श्रीमान रेजीडेन्ट मजिस्ट्रेट महोदय अयोध्या
वाद सं.
काशीनाथ
बनाम
वृजकिशोर आदि
बनाम–1–फरियाद 2– शाहिद अली 3– माजिद अली पुत्रगण स्वर्गीय अहमद अली 4– शेर अली 5– आरिफ अली पुत्रगण शौकत अली 6– अकबर अली 7– सरदार अली 8– बाबर अली पुत्रगण मोहम्मद अली 9– साहिल 10– गोलू पुत्रगण नौशाद अली 11– जहांगीर अली 12– अमीर अली 13– समी अली पुत्रगण मुनीर अली 14– शायरानिशा पत्नी मुनीर अली समस्त निवासीगण ग्राम– काजीपुर गाडर परगना अमसिन तहसील सदर जनपद– अयोध्या
तारीख पेशी 14–05–2024
चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 05 के 14 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।
मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस
(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)
न्यायालय–सिविल जज (जू.डि.) सदर महोदय फैजाबाद
मूल वाद संख्या 1026 / 2023
श्रीमती कमलेश कुमारी
बनाम
कृष्णलाल
बनाम–1– कृष्णलाल पुत्र सियाराम निवासी ग्राम– फूलगिरी का पुरवा मजरे इनायत नगर परगना पश्चिम राठ तहसील मिल्कीपुर जनपद– अयोध्या
तारीख पेशी 18–05–2024
चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 05 के 18 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।
मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस
(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)
न्यायालय–सिविल जज (जू.डि.) सदर महोदय फैजाबाद
मूल वाद संख्या 1113 / 2021
मो0 अयूब आदि
बनाम
सुनील कुमार मौर्य आदि
बनाम–1– सुनील कुमार मौर्य 2– सन्दीप कुमार मौर्य पुत्रगण जगदीश कुमार मौर्य निवासी मकान नम्बर 7 / 10 / 48 शान्तीपुरम कालोनी धनीराम का पुरवा देवकाली फैजाबाद
3– सभाराज वर्मा पुत्र राजकरन वर्मा निवासी पटवारी का पुरवा रानोपाली पोस्ट– दर्शन नगर जनपद– अयोध्या 4– शम्भू नरायन हरीनरायन फाउन्डेशन 2 / 264 विकास खण्ड गोमतीनगर लखनऊ जरिये अध्यक्ष अतुल कुमार सिंह पुत्र स्वर्गीय हरीनरायन सिंह निवासी ग्राम– आशापुर पोस्ट– दर्शन नगर जिला– अयोध्या 5– अनिल यादव पुत्र नन्हकू यादव निवासी धनीराम का पुरवा देवकाली फैजाबाद 6– महफूज आलम 7– जावेद आलम 8– नूर आलम 9– फिरोज आलम पुत्रगण स्वर्गीय महमूद आलम निवासीगण मोहल्ला बरवारी टोला टेढी बाजार अयोध्या परगना हवेली अवध तहसील सदर जनपद– अयोध्या
तारीख पेशी 06–07–2024
चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 07 के 06 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।
मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।
द0 हाकिम

कुआनो नदी में डोंगी नाव डूबने से बाबा-पौत्र समेत समेत तीन की मौत

संवाददाता-संतकबीरनगर। धनघटा थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत मझौरा के नकहा टोला में रविवार को कुआनो नदी मे डूबने से दो बाबा और पौत्र समेत तीन की डोंगी नाव डूबने से मौत हो गई। ये तीनों नदी के दूसरे छोर पर गई भैंस को वापस लाने के लिए छोटी नाव से उस पार जा रहे थे। मृतकों में एक अन्य बच्चा भी शामिल है। पुलिस ने गोताखोरों के सहयोग से शवों को बाहर निकालवाकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

स्थानीय थाना क्षेत्र के ग्राम मझौरा के नकहा टोला के गोपाल (65) पुत्र बरखू, उसका पौत्र शिवम (10) पुत्र सुनीता व आर्यन (8) पुत्र शैलेन्द्र कन्नौजिया कुआनो नदी के तट पर भैंस चरा रहे थे। गर्मी से परेशान भैंसें नदी में चली गई। कुछ समय बाद भैंस नदी के दूसरी छोर के उस पार चली गई। भैंस को हांकने के लिए तीनों पास में पड़ी हुई मछली पकड़ने वाली एक छोटी डोंगी नाव में बैठकर नदी के उस पार जाने लगे। नाव लगभग बीच नदी में पहुंची थी कि डगमगाकर डूब गई और उस पर सवार तीन लोग भी नदी में डूब गए। नदी के किनारे पर मौजूद कुछ लोगों ने तीनों को डूबते देखा तो शोर मचाना शुरू किया। आसपास के सैकड़ों लोग नदी के तट पर पहुंच गए। पुलिस ने गोताखोरों की मदद से तलाश शुरू कराई। तीनों के शव बरामद हो गए। पुलिस ने उन्हें पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। इस हादसे गांव में शोक की लहर है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

आम तोड़ने को लेकर चली गोली, दो जख्मी

संवाददाता-सिद्धार्थनगर। गोहर थाना क्षेत्र के पिपरा गांव में रविवार सुबह आम तोड़ने की विवाद में फायरिंग और पत्थरबाजी की घटना हो गई। फायरिंग में दो लोग जख्मी हुए हैं, जिनका बांसी में इलाज चल रहा है। सीओ सहित आला अधिकारी मौके पर जांच में जुटे हुए है। जानकारी के अनुसार गोल्हौरा थाना क्षेत्र के पिपरा गांव में आम तोड़ने के हुए विवाद में अचानक एक पक्ष की तरफ से गोली चला दी गई। इसमें दो लोग घायल हो गए। एक पक्ष के ओम प्रकाश त्रिपाठी को पेट लगी है गोली है, जबकि दूसरे पक्ष के ग्राम प्रधान के पुत्र मोहन निषाद के हाथ में गोली लगी है। दोनों घायलों को इलाज के लिए पीएचसी बांसी भेजा गया है। दोनों पक्ष के बीच चार महीने से जमीनी विवाद चल रहा है। घटना की सूचना के बाद मौके पर पहुंचे अपर पुलिस अधीक्षक,एसडीएम कुणाल व सी ओ इटवा गर्वित सिंह ने घटना का जायजा लिया।

नदी में नहाने गए युवक का बहता मिला शव

संवाददाता-गोरखपुर। मोतीराम अड्डा, हिंदुस्तान संवाद। खोराबार थानाक्षेत्र के मिर्जापुर बाजार पीपा पुल के पास रविवार की सुबह नदी में उतराता शव को ग्रामीणों ने देखा तो पुलिस को सूचना दी। मौके पर पुलिस पहुंचकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

रामपुर केरवनिया निवासी अवधेश (38) पुत्र मुराली अपने दो अन्य साथियों के साथ खोराबार थानाक्षेत्र के मिर्जापुर पीपा पुल के पास राप्ती नदी में शुक्रवार को नहाने गया हुआ था। इस दौरान अवधेश के दोनों साथी अपने घर चले आए। वह नहाता रहा। जब देर शाम अवधेश अपने घर नहीं पहुंचा तो परिजन पुलिस को सूचना देते हुए ढूंढना शुरू किया। शनिवार की देर शाम पीपा पुल के पास पहुंची खोराबार पुलिस ने नदी के किनारे से युवक का जूता व कपड़ा बरामद किया। देर शाम युवक का कुछ पता नहीं चला। रविवार की सुबह ग्रामीणों ने नदी के किनारे तैरता हुआ शव को देखकर पुलिस को सूचना दी। युवक दो बच्चों का पिता था। वह राजगीर मिस्त्री का काम करता था। उसकी मौत पर परिवार में कोहराम मच गया।

पीपीगंज में इनामी हिस्ट्रीशीटर गुड्डू ढाढ़ी का घर कुर्क

संवाददाता-गोरखपुर। पीपीगंज थाना क्षेत्र के इनामिया हिस्ट्रीशीटर भरोहिया निवासी गुड्डू ढाढ़ी के घर रविवार को पीपीगंज पुलिस ने पहुंचकर गैंगस्टर एक्ट के तहत् कुर्की की। कार्रवाई लगभग दो घंटे तक चली।

पीपीगंज थाना क्षेत्र के भरोहिया गांव निवासी पीपीगंज थाने का इनामिया हिस्ट्रीशीटर गुड्डू ढाढ़ी वर्तमान में फरार चल रहा है। इस शातिर बदमाश के विरुद्ध गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई की गई थी, जिसमें वह न्यायालय में उपस्थित नहीं हुआ। न्यायालय ने कुर्की करने का आदेश दिया। उसी के अनुपालन में पीपीगंज पुलिस ने रविवार को लगभग दो घंटे तक शातिर बदमाश हिस्ट्रीशीटर के घर की कुर्की की है। इस फरार शातिर इनामिया हिस्ट्रीशीटर गुड्डू ढाढ़ी के विरुद्ध पीपीगंज, कैम्पियरगंज, चिलुआताल, जनपद संतकबीरनगर में लगभग पन्द्रह गंभीर अपराध के मुकदमे दर्ज हैं। पीपीगंज थानाध्यक्ष पुरुषोत्तम आनंद सिंह ने कहा कि गुड्डू ढाढ़ी एक शातिर बदमाश हिस्ट्रीशीटर और पीपीगंज थाने का इनामर है। गैंगस्टर के घर कुर्की की कार्रवाई की गई है।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

कं0 वाद सं0 T 202117140202008

वाद सं0 /

अदालत- श्रीमान उप जिलाधिकारी भानपुर जिला-बस्ती

अवधेश नरायन सिंह आदि

बनाम

कृपाशंकर आदि

1. कृपाशंकर 2. जयराम पुत्रगण सरजू प्रसाद 3. रामफेर पुत्र बहाऊ 4. रामफेर पुत्र सालिक 5. राम उजागिर पुत्र जगमोहन 6. पाटनदीन पुत्र बच्चूलाल 7. रामहरख पुत्र घिराऊ 8. पारसनाथ पुत्र हिरावन 9. श्रीमती शारदा देवी पत्नी रामजतन 10. रामदीन 11. ठाकुरदीन पुत्रगण रामलाल 12. श्रीमती दुलारी पत्नी रमेसर 13. रामरक्षा 14. विश्राम पुत्रगण शिवपूजन 15. समयदीन पुत्र रामचन्दर 16. छामदास 17. रामजियावन 18. छोटेलाल पुत्रगण कन्हई 19. शिवपूजन पुत्र राम चरन 20. तिलकराम 21. रामकुमार पुत्रगण समयदीन 22. श्रीमती नोहरा पत्नी समयदीन 23. राम किशोर 24. ब्रम्हादीन पुत्रगण शिवचरन 25. प्रदीप कुमार सिंह 26. संदीप कुमार सिंह पुत्रगण कृष्ण प्रताप नरायन सिंह 27. श्रीमती कमला सिंह पत्नी कृष्ण प्रताप सिंह 28. आज्ञाराम 29. रामजनम पुत्रगण राममूरत 30. श्रीमती औतारी देवी पत्नी राममूरत 31. लालजी प्रजापति पुत्र राम प्रसाद 32. पूरन पुत्र राम प्रसाद 33. केशराम प्रजापति पुत्र रामदीन 34. रामशब्द पुत्र घिराऊ 35. राममूरत पुत्र राम चन्दर साकिनान पिपराजप्ती तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरब तहसील भानपुर जिला-बस्ती 36. अ0भू0प्र0स0 द्वारा ग्राम पंचायत पिपराजप्ती तप्पा सिकन्दरपुर परगना बस्ती पूरब तहसील भानपुर जिला-बस्ती

तारीख पेशी 08-05-2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 08 माह 05 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जबावदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबावदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

गोला के बिसरा प्लांट में पिटाई से ट्रक चालक की मौत

संवाददाता-गोरखपुर। गोला थाना क्षेत्र के बिसरा में प्लांट पर कार्यरत एक ट्रक चालक अन्य चालकों की पिटाई से घायल हो गया। प्लांट पर कार्यरत कामगार उसे सीएचसी उरुवा ले गए। वहां से उसे चिकित्सकों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया, जहां देर रात उसकी मौत हो गई। सिकरीगंज से बड़हलगंज तक मार्ग चौड़ीकरण का काम चल रहा है। इसके लिए बिसरा में प्लांट तैयार किया गया। यहीं से कार्य स्थल पर गिट्टियां व अन्य सामग्री को ट्रकों व डंफरों द्वारा पहुंचाया जाता है। मजदूर व अन्य लोग प्लांट पर ही रहकर काम करते हैं। बताया जा रहा है कि बस्ती जिले के कुदरहा पिपरपाती का रहने वाला ट्रक चालक अश्वनी(30) रात में खूब शराब पिए हुए था। इसी बीत परिसर में ही रहने वाले दो अन्य ट्रक चालकों से उसका किसी बात को लेकर विवाद हो गया। इसी दौरान इन सबमें हाथापाई होने लगी। इसी दौरान वह घायल हो गया। थानाध्यक्ष मधुपनाथ मिश्रा ने बताया कि युवक का शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। तहरीर मिलने पर जांच पड़ताल की जाएगी।

ट्रेन से कटकर एक व्यक्ति की मौत

संवाददाता-सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ रेलवे स्टेशन के दक्षिण रेल समपार फाटक के पास रविवार की सुबह ट्रेन से कटकर एक अज्ञात व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक नीले रंग का जींस पैंट व गुलाबी शर्ट पहने हुआ था। उसका शरीर दो टुकड़ों में बट जाने से ठीक से पहचान नहीं हो सकी। स्टेशन मास्टर ने कहा कि गोरखपुर से लखनऊ जाने वाली इंटरसिटी एक्सप्रेस के ड्राइवर ने देखकर घटना की जानकारी दी। जीआरपी चौकी प्रभारी आजम अंसारी ने शव की पहचान कराने के लिए आसपास के लोगों को बुलाया पर उसकी पहचान नहीं हो पाई। उन्होंने कहा कि शव की शिनाख्त के लिए मोर्चरी हाऊस में रखा गया है। मृतक के जींस की जेब से कोई पहचान पत्र न मिलने से शव की पहचान के लिए दो चार स्टेशन मास्टर को सूचना दी गई है।

तांत्रिक की मोहब्बत में डूबी महिला, दो बच्चों को छोड़कर बाबा संग फरार

संवाददाता-गोरखपुर। वैसे तो प्रेम-प्रसंग में प्रेमी के साथ महिला के भागने के खबरें अक्सर आती रहती हैं, लेकिन यूपी के गोरखपुर से जो मामला सामने आया है उसने लोगों को हैरत में डाल दिया। यहां एक महिला पर भूत का साया होने के चलते उसकी झाड़-फूंक चल रही थी। महिला पर झाड़-फूंक करने के लिए उसके घर एक तांत्रिक आता था। इसी दौरान महिला का तांत्रिक के साथ इश्क हो गया। महिला और तांत्रिक एक-दूसरे के इश्क में इतना डूब गए कि दोनों मिलकर कांड कर डाला। इसकी जानकारी महिला की सास को नहीं थी। महिला का पति विदेश में था। महिला की हरकतों को देखकर उसकी सास भी उस पर भूत होने की बात पर यकीन करने लगी थी, इसी वजह से तांत्रिक पर जरा सा भी शक नहीं हुआ। एक दिन महिला अपने दो बच्चों को लेकर एक कार्यक्रम में गई थी। वहां से महिला दोनों बच्चों को छोड़कर तांत्रिक के साथ भाग निकली। इसकी जानकारी जब सास को हुई तो वह दंग रह गई। उसने पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई।

मीडियो रिपोर्ट्स के मुताबिक मामला गुलरिहा थाना क्षेत्र के एक गांव का है। यहां की रहन वाली महिला ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसका बेटा विदेश में रहता है। कुछ साल पहले ही उसके बेटे की शादी हुई थी। शादी के कुछ दिन बाद ही बहू तनाव में रहने लगी। आए दिन घर में कलह करती थी। कलह के दौरान वह इतनी हमलावर हो जाती थी कि जो भी सामने दिखता उसे मारने दौड़ती थी। शांत होने पर वह खुद पर भूत का साया होने की बात कहती थी। झाड़-फूंक करने के लिए गांव एक तांत्रिक उसके घर आने लगा था। तांत्रिक का बहू के साथ चक्कर चल जाएगा इसकी भनक तक नहीं थी। दोनों के बीच संबंध भी बन गए थे। तांत्रिक के आने के बाद बहू खुश रहने लगी थी। इसी वजह से उसे किसी तरह का शक नहीं हुआ। महिला ने बताया कि दो दिन पहले एक रिश्तेदार के यहां एक मांगलिक कार्यक्रम था। बहू अपने दो बच्चों को लेकर वहां गई थी।

महिला ने पुलिस को बताया कि रिश्तेदारों का फोन आया था। उन्होंने बताया कि आपकी बहू यहां दोनों बच्चों को छोड़कर एक तांत्रिक के साथ फरार हो गई है। बच्चे हमारे पास है, इन्हें आकर ले जाइए। महिला ने बताया कि उसका बेटा विदेश में रहता है, ऐसे में दो मासूम बच्चों को कैसे पालेगी। महिला ने बहू और तांत्रिक के खिलाफ कार्रवाई करने की गुहार लगाई है। महिला का कहना है कि उसकी बहू को किसी तरह से वापस ले आएं। इस संबंध में एसपी नॉर्थ ने बताया कि मामले की तहरीर मिली है, जांच की जा रही है। मुकदमा दर्ज करके आरोपी की तलाश की जाएगी।

जिला स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता 12 मई को

संवाददाता-गोरखपुर। टेबल टेनिस एसोसिएशन की ओर से 12 मई को जिला स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता का आयोजन मेट्रोपॉलिटन स्कूल में किया जाएगा। इसमें पुरुष और महिला वर्ग विभिन्न आयु वर्ग के खिलाड़ी प्रतिभाग करेंगे।

टेटे एसोसिएशन के सचिव विनीत चौरसिया व उपाध्यक्ष राजेंद्र सिंह सैनी ने रविवार को प्रेसवार्ता में बताया कि पिछले कई वर्षों के लगातार प्रयास से इस खेल को गोरखपुर में जीवित किया गया है। अब यहां के खिलाड़ी साल दर साल प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में जिले का नाम रोशन कर रहे हैं।

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब

(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

वाद सं0 171/2022

अदालत-श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद बस्ती जिला-बस्ती

राजेन्द्र

बनाम

रामनवल आदि

1. रामनवल उम्र 55 साल 2. जयद्रथ उम्र 48 साल पुत्रगण रामायन साकिनान मौजा नगरखास तप्पा पिलाई परगना नगर पूरब तहसील व जिला-बस्ती

तारीख पेशी 29-05-2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 29 माह 05 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जबावदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबावदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्रह समायत अपील

वाद सं0C 20171700828

अदालत-श्रीमान आयुक्त बस्ती मण्डल जिला-बस्ती

वाजिद अली आदि

बनाम

इरसाद अहमद आदि

1. इरसाद अहमद पुत्र अकबाल अहमद 2. सादिया खातून पत्नी अ0 वली 3. अब्दुल तौव्वाब पुत्र मोहम्मद 4. सिराताज पुत्र मो0 हुसेन 5. मोहिउद्दीन पुत्र नसीबुल्लाह 6. सुहेल अहमद पुत्र अब्दुल हमीद 7. विनोद कुमार पुत्र मुन्नीलाल 8. श्रीमती दुलारी पत्नी स्व0 किशोरीलाल 9. चन्द्रबली पुत्र तमेसर 10/1 श्रीमती नजमा खातून पत्नी अकबाल अहमद 10/2 इरशाद अहमद 10/3 नौसाद अहमद 10/4 शमशाद अहमद 10/5 अरशाद अहमद 10/6 दिलशाद अहमद 10/7 जौवाद अहमद पुत्रगण आफताब उर्फ अकबाल 11. सरजू प्रसाद पुत्र छोटेलाल 12. वशीर अहमद पुत्र जमील अहमद 13. अब्दुल काजी पुत्र अब्दुलवारी 14. अफजल हुसेन पुत्र सदरूद्दीन 15. बाबुल्लाह पुत्र जकाउल्लाह 16. यार मोहम्मद पुत्र नूर मोहम्मद 17. अशोक कुमार पुत्र राम प्रसाद 18. राम सुमेर पुत्र रामलखन 19. शिव कुमार पुत्र बरसाती 20. मूलचन्द्र पुत्र बच्चूलाल साकिनान मौजा उसरा शहीद तप्पा उजियार पगना मगहर पूरब तहसील खलीलाबाद जिला-संतकबीरनगर 21. भू0प्र0स0 उसरा शहीद जरिये अध्यक्ष ग्राम उसरा शहीद तप्पा उजियार पगना मगहर पूरब तहसील खलीलाबाद जिला-संतकबीरनगर 22. उत्तर प्रदेश राज्य सरकार जरिये जिलाधिकारी संतकबीरनगर

तारीख पेशी 17-05-2024

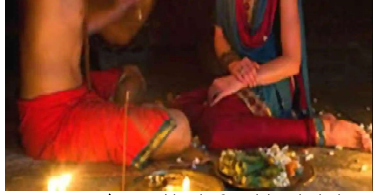

अपील बनराजी अदालत मुकाम बस्ती

मयरिखा महीना सन् 20 ई0 रेस्पान्डेन्टस

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 17 महीना 05 सन 2024 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है।

अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जबाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी।

आज बतारीख माह सन 20 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्रह समायत अपील

वाद सं0C 20171700824

अदालत-श्रीमान आयुक्त बस्ती मण्डल जिला-बस्ती

सरजू प्रसाद आदि

बनाम

वाजिद अली आदि

2. मो0 अरशद पुत्र मो0 इलियास 1/1 अरशन अली 1/2 मोहम्मद अशरफ 4. मो0 मोहसिन पुत्र मो0 इलियास 1/3 अफगान अली पुत्रगण स्व0 वाजिद अली 3/1 शेरे आलम 3/2 शाह आलम 3/3 मकसूद अहमद 3/4 महफूज अहमद 3/5 मासूक अहमद पुत्रगण एकराम 5. इरसाद अहमद पुत्र अकबाल अहमद 6. साबिया खातून पत्नी अब्दुल वली 7. अब्दुल तैययाब पुत्र मोहम्मद 8. सिरताज अहमद पुत्र मो हुसेन 9. मोहिउद्दीन पुत्र नसीबुल्लाह 10. सुहेल अहमद पुत्र अब्दुल हमीद 11. विनोद कुमार पुत्र मुन्नी लाल 12. श्रीमती दुलारी पत्नी स्व0 किशोरी लाल 13. चन्द्रबली पुत्र तमेसर 14/1 श्रीमती नजमा खातून पत्नी स्व0 आफताब उर्फ अकबाल 14/2 इरशाद अहमद 14/3 नौसाद अहमद 14/4 शमशाद अहमद 14/5 अरशाद अहमद 14/6 दिलशाद अहमद 14/7 जौवाद अहमद पुत्रगण स्व0 अकबाल 15. अब्दुल काजी पुत्र अब्दुलवारी साकिनान मौजा उसरा शहीद तप्पा उजियार पगना मगहर पूरब तहसील खलीलाबाद जिला-संतकबीरनगर 16. भू0प्र0स0 उसरा शहीद जरिये अध्यक्ष ग्राम उसरा शहीद तप्पा उजियार पगना मगहर पूरब तहसील खलीलाबाद जिला-संतकबीरनगर 17. सरकार उ0प्र0 जरिये जिलाधिकारी संतकबीरनगर

तारीख पेशी 17-05-2024

अपील बनराजी अदालत मुकाम बस्ती

मयरिखा महीना सन् 20 ई0 रेस्पान्डेन्टस

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 17 महीना 05 सन 2024 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है।

अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जबाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी। आज बतारीख माह सन 20 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्रह समायत अपील

वाद सं0

अदालत-श्रीमान अपर आयुक्त (प्रशासन) बस्ती मण्डल जिला-बस्ती

नवीरहम आदि

बनाम

रामस्वारथ आदि

1. रामस्वारथ पुत्र मंगरू 2. तिलकधारी पुत्र लुटावन 3. सुक्खू पुत्र पतिराज 4. दूधनाथ पुत्र घोलर 5. बैजनाथ पुत्र घोलर 6. गेना देवी पत्नी ग्रीस 7. रामबचन पुत्र मोतीलाल 8. जुनैद अहमद पुत्र हसमुल्लाह 9. सानिया खातून पत्नी जुनैद अहमद 10. जावेद अहमद पुत्र गुलाम हजरत 11. इरफान अहमद पुत्र अली अहमद 12. सायरा खातून पत्नी कासिम अली 13. मुश्ताक अहमद पुत्र बैतुल्लाह 14. ताहिरा खातून पत्नी मुश्ताक अहमद 15. सफीकुल्लाह पुत्र मो0 रजा 16. श्रीमती शीला देवी पत्नी सुभाष साकिनान मौजा गिरधरपुर तप्पा दखिन हवेली परगना मगहर पूरब तहसील खलीलाबाद जिला संतकबीरनगर 17. भू0प्र0स0 बावत ग्राम पंचायत गिरधरपुर तप्पा दखिन हवेली परगना मगहर पूरब तहसील खलीलाबाद जिला संतकबीरनगर अध्यक्ष/ प्रधान 18. उ0प्र0 राज्य सरकार द्वारा कलेक्टर संतकबीरनगर

तारीख पेशी 13-05-2024

अपील बनराजी अदालत मुकाम बस्ती

मयरिखा महीना सन् 20 ई0 रेस्पान्डेन्टस

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 13 महीना 05 सन 2024 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है।

अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जबाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी।

आज बतारीख 04 माह 05 सन 2024 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब

(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

मूलवाद सं0 412/2023

अदालत-श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद बस्ती जिला-बस्ती

पुष्पा देवी

बनाम

मिट्ठूलाल आदि

1. मिट्ठूलाल 2. गोविन्द कुमार पुत्रगण दिवाकर मिश्रा निवासीगण ग्राम व पोस्ट देईसाड़ तप्पा मथौली परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला बस्ती -प्रतिवादी प्रथम वर्ग 3. रामकरन उम्र 75 वर्ष पुत्र केवला प्रसाद -प्रतिवादी द्वितीय वर्ग 4. संतोष कुमार 5 आशुतोष मिश्रा 6. आचार्य मिश्रा पुत्रगण जयन्ती प्रसाद 7. सूर्यप्रती पत्नी जयन्ती प्रसाद 8. परमात्मा प्रसाद पुत्र अयोध्या प्रसाद 9. मंत्री प्रसाद पुत्र धर्मराज 10. दुर्गा प्रसाद 11. जगदम्बा प्रसाद पुत्रगण चन्द्र प्रकाश 12. साहिद अली 13. अली राजिद पुत्रगण अबूबकर 14. दिवाकर 15. राजेश पुत्रगण रामस्वारथ 16. जैशनाथ 17. विनोद पुत्रगण कालिका प्रसाद 18. महेन्द्र 19. प्रमोद पुत्रगण जनार्दन 20. कमलावती पत्नी जनार्दन निवासीगण देईसाड़ तप्पा मथौली परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला बस्ती 21. सतीश चन्द्र पुत्र श्यामदेव निवासी वैजीपुर तप्पा मथौली परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला बस्ती 22. कालिन्दी देवी पत्नी हनुमान निवासी बानपुर तप्पा कबरा परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला बस्ती 23. प्रबन्धक मदरसा अरबिया इस्लामिया जरिए हाजी मो0 हुसैन पुत्र असगर ग्राम व तप्पा मथौली परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला-बस्ती

तारीख पेशी 20-05-2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 20 माह 05 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जबावदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबावदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुदाअलेह मुतवफ्फा

(आर्डर 22, कायदा 4)

न्यायालय-श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद बस्ती जिला-बस्ती

वाद सं0 406/1976

मौलवी मोहम्मद इद्रीस

बनाम

मौलवी मोहम्मद मुस्तफा आदि

4/2/1 अकबरूनिशा पत्नी बदरूद्दीन 4/2/2 सगीर अहमद 4/2/3 कमाल अहमद 4/2/4 जमाल अहमद पुत्रगण बदरूद्दीन 4/2/5 समीर अहमद आयु लगभग 16 वर्ष 4/2/6 मो0 हाफिज आयु लगभग 14 वर्ष 4/2/7 अहमद रजा आयु लगभग 12 वर्ष अवयस्क पुत्रगण बदरूद्दीन द्वारा संरक्षिका माता स्वयं अकबरूनिशा 4/2/8 सफीकुन्निशा आयु लगभग 18 वर्ष 4/2/9 कहकसा आयु लगभग 19 वर्ष पुत्रीगण बदरूद्दीन 4/2/10 दरेख्सा आयु लगभग 13 वर्ष 4/2/11 तहरीम आयु लगभग 17 वर्ष अवयस्क पुत्रीगण बदरूद्दीन द्वारा संरक्षिका माता स्वयं अकबरूनिशा 4/2/12 अन्जुम पत्नी अनीस पुत्री बदरूद्दीन निवासीगण मोहल्ला नई बाजार तप्पा मेंहदावल परगना मगहर पूरब तहसील मेंहदावल जिला संतकबीरनगर 4/2/13 जैनब खातून पत्नी फिरोज पुत्री बदरूद्दीन निवासी ग्राम काजीपुर कस्बा मगहर जिला संतकबीर नगर हाल मुकाम बारहगदी कटहरिया मेंहदावल जिला संतकबीरनगर 4/2/14 तबस्सुम पत्नी शहजाद पुत्री बदरूद्दीन निवासी ग्राम हाकिमराई थाना धर्मसिंहवा जिला संतकबीरनगर

तारीख पेशी 15-05-2024

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी करार दिये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 15 माह 05 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजियें और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा। बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1-4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक-दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक-प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या-फैजाबाद कार्यालय- चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या-फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय- आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय- इलाहीबाग गोरखपुर।

मो09450567450 9336715406, ई-मेलbhartiyabasti@yahoo.com bhartiyabasti@gmail.com